الجزء ١٢

وَمَا مِنْ دَآبَّةٍ فِى الْاَرْضِ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ رِزْقُهَا

उस का रिज़्क़	अल्लाह	पर	मगर	ज़मीन	में (पर)	चलने वाला	से (कोई)	और नहीं

وَيَعْلَمُ مُسْتَقَرَّهَا وَمُسْتَوْدَعَهَا ؕ كُلٌّ فِىْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ ﴿٦﴾

6	रौशन किताब	में	सब कुछ	और उस के सौंपे जाने की जगह	उस का ठिकाना	और वह जानता है

وَهُوَ الَّذِىْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ فِىْ سِتَّةِ اَيَّامٍ وَّكَانَ

और था	छः (6) दिन	में	और ज़मीन	आस्मान (जमा)	पैदा किया	जो - जिस	और वही

عَرْشُهٗ عَلَى الْمَآءِ لِيَبْلُوَكُمْ اَيُّكُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا ؕ وَلَئِنْ قُلْتَ

आप कहें	और अगर	अ़मल में	बेहतर	तुम में कौन	ताकि तुम्हें आज़माए	पानी पर	उस का अर्श

اِنَّكُمْ مَّبْعُوْثُوْنَ مِنْۢ بَعْدِ الْمَوْتِ لَيَقُوْلَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْۤا اِنْ هٰذَاۤ

नहीं यह	उन्हों ने कुफ़्र किया	वह लोग जो	तो ज़रूर कहेंगे वह	मौत - मरना	बाद	उठाए जाओगे	कि तुम

اِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٧﴾ وَلَئِنْ اَخَّرْنَا عَنْهُمُ الْعَذَابَ اِلٰۤى اُمَّةٍ

एक मुद्दत	तक	अ़ज़ाब	उन से	हम रोक रखें	और अगर	7	खुला	जादू	मगर (सिर्फ़)

مَّعْدُوْدَةٍ لَّيَقُوْلُنَّ مَا يَحْبِسُهٗ ؕ اَلَا يَوْمَ يَاْتِيْهِمْ لَيْسَ مَصْرُوْفًا

टाला जाएगा	न	उन पर आएगा	जिस दिन	याद रखो	क्या रोक रही है उसे	तो वह ज़रूर कहेंगे	गिनी हुई - मुऐयन

ع ١/٨ عَنْهُمْ وَحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿٨﴾ ع وَلَئِنْ اَذَقْنَا

हम चखादें	और अगर	8	मज़ाक़ उड़ाते	उस का	थे	जिस	उन्हें	और घेरलेगा	उन से

الْاِنْسَانَ مِنَّا رَحْمَةً ثُمَّ نَزَعْنٰهَا مِنْهُ ۚ اِنَّهٗ لَيَئُوْسٌ كَفُوْرٌ ﴿٩﴾

9	नाशुक्रा	अलबत्ता मायूस	बेशक वह	उस से	हम छीन लें वह	फिर	कोई रहमत	अपनी तरफ़ से	इन्सान को

وَلَئِنْ اَذَقْنٰهُ نَعْمَآءَ بَعْدَ ضَرَّآءَ مَسَّتْهُ لَيَقُوْلَنَّ ذَهَبَ

जाती रहीं	तो वह ज़रूर कहेगा	उसे पहुँची	सख़्ती के बाद	नेमत (आराम)	उसे चखादें	और अगर

السَّيِّاٰتُ عَنِّىْ ؕ اِنَّهٗ لَفَرِحٌ فَخُوْرٌ ﴿١٠﴾ لا اِلَّا الَّذِيْنَ صَبَرُوْا

जिन लोगों ने सब्र किया	मगर	10	शेख़ीख़ोर	इतराने वाला	बेशक वह	मुझ से	बुराइयां

وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ؕ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ كَبِيْرٌ ﴿١١﴾

11	बड़ा	और सवाब	बख़्शिश	उन के लिए	यही लोग	नेक	और अ़मल किए

فَلَعَلَّكَ تَارِكٌۢ بَعْضَ مَا يُوْحٰۤى اِلَيْكَ وَضَآئِقٌۢ بِهٖ

उस से	और तंग होगा	तेरी तरफ़	वहि किया गया	जो	कुछ हिस्सा	छोड़ दोगे	तो शायद (क्या) तुम

صَدْرُكَ اَنْ يَّقُوْلُوْا لَوْلَاۤ اُنْزِلَ عَلَيْهِ كَنْزٌ اَوْ جَآءَ مَعَهٗ

उस के साथ	आया	या	ख़ज़ाना	उस पर	उतरा	क्यों न	कि वह कहते हैं	तेरा सीना (दिल)

مَلَكٌ ؕ اِنَّمَاۤ اَنْتَ نَذِيْرٌ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ وَّكِيْلٌ ﴿١٢﴾ ط

12	इख़्तियार रखने वाला	हर शै	पर	और अल्लाह	डराने वाले	कि तुम	इसके सिवा नहीं	फ़रिश्ता

और कोई ज़मीन पर चलने (फिरने) वाला नहीं, मगर उस का रिज़्क़ अल्लाह पर (अल्लाह के ज़िम्मे) है, और वह जानता है उस का ठिकाना और उस के सौंपे जाने की जगह, सब कुछ रौशन किताब (लौहे महफ़ूज़) में है। (6)

और वही है जिस ने पैदा किए आस्मान और ज़मीन छः दिन में, और उस का अर्श पानी पर था, ताकि तुम्हें वह आज़माए कि तुम में कौन बेहतर है अ़मल में? और अगर आप (स) कहें कि तुम मरने के बाद उठाए जाओगे तो वह लोग ज़रूर कहेंगे जिन्हों ने कुफ़्र किया कि यह सिर्फ़ खुला जादू है। (7)

और अगर हम उन से अ़ज़ाब रोक रखें एक मुद्दते मुऐयन तक वह ज़रूर कहेंगे क्या चीज़ उसे रोक रही है? याद रखो! जिस दिन उन पर (अ़ज़ाब) आएगा उन से न टाला जाएगा, और उन्हें घेर लेगा जिस का वह मज़ाक़ उड़ाते थे। (8)

और अगर हम इन्सान को अपनी तरफ़ से किसी रहमत का मज़ा चखादें फिर वह उस से छीन लें, तो बेशक वह मायूस, नाशुक्रा हो जाता है। (9)

और अगर हम उसे सख़्ती के बाद आराम चखा दें जो उसे पहुँची हो तो वह ज़रूर कहेगा मुझ से बुराइयां जाती रहीं, बेशक वह इतराने वाला शेख़ी ख़ोर है। (10)

मगर जिन लोगों ने सब्र किया और नेक अ़मल किए यही लोग हैं जिन के लिए बख़्शिश और बड़ा सवाब है। (11)

तो क्या तुम छोड़ दोगे (उस का) कुछ हिस्सा जो तुम्हारी तरफ़ वहि किया गया है, और उस से तुम्हारा दिल तंग होगा कि वह कहते हैं कि उस पर क्यों न उतरा कोई ख़ज़ाना या उस के (साथ) फ़रिश्ता (क्यों न) आया? इस के सिवा नहीं कि तुम डराने वाले हो और अल्लाह हर शै पर इख़्तियार रखने वाला है। (12)

اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ؕ قُلْ فَاْتُوْا بِعَشْرِ سُوَرٍ مِّثْلِهٖ مُفْتَرَيٰتٍ

घड़ी हुई	इस जैसी	दस सूरतें	तो तुम ले आओ	आप (स) कहदें	उस को खुद घड़ लिया है	क्या वह कहते हैं

وَّادْعُوْا مَنِ اسْتَطَعْتُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿١٣﴾

13	सच्चे	हो	अगर तुम	अल्लाह	सिवाए	जिस को तुम बुला सको	और तुम बुला लो

فَاِلَّمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَكُمْ فَاعْلَمُوْۤا اَنَّمَاۤ اُنْزِلَ بِعِلْمِ اللّٰهِ وَاَنْ لَّاۤ اِلٰهَ

कोई माबूद नहीं	और यह कि	अल्लाह के इल्म से	नाज़िल किया गया है	कि यह तो	तो जान लो	तुम्हारा	फिर अगर वह जवाब न दे सकें

اِلَّا هُوَ ۚ فَهَلْ اَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿١٤﴾ مَنْ كَانَ يُرِيْدُ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا

दुनिया कि ज़िन्दगी	चाहता है	जो	14	तुम इस्लाम लाते हो	पस क्या	उस के सिवा

وَزِيْنَتَهَا نُوَفِّ اِلَيْهِمْ اَعْمَالَهُمْ فِيْهَا وَهُمْ فِيْهَا لَا يُبْخَسُوْنَ ﴿١٥﴾

15	कमी किए जाएंगे (नुक़सान न होगा)	न	इस में	और वह	इस में	उन के अ़मल	उन के लिए	हम पूरा कर देंगे	और उस की ज़ीनत

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ لَيْسَ لَهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ اِلَّا النَّارُ ۖ وَحَبِطَ مَا

जो	और अकारत गया	आग के सिवा	आख़िरत में	उन के लिए	वह जो कि	यही लोग

صَنَعُوْا فِيْهَا وَبٰطِلٌ مَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٦﴾ اَفَمَنْ كَانَ عَلٰى

पर	हो	पस क्या जो	16	वह करते थे	जो	और नाबूद हुए	उस में	उन्हों ने किया

بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّهٖ وَيَتْلُوْهُ شَاهِدٌ مِّنْهُ وَمِنْ قَبْلِهٖ كِتٰبُ مُوْسٰۤى

मूसा (अ) की किताब	उस से पहले	और	उस से	गवाह	और उस के साथ हो	अपने रब के	खुला रास्ता

اِمَامًا وَّرَحْمَةً ؕ اُولٰٓئِكَ يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ ؕ وَمَنْ يَّكْفُرْ بِهٖ مِنَ

से	मुन्किर हो इस का	और जो	उस पर	ईमान लाते हैं	यही लोग	और रहमत	इमाम

الْاَحْزَابِ فَالنَّارُ مَوْعِدُهٗ ۚ فَلَا تَكُ فِيْ مِرْيَةٍ مِّنْهُ ۗ اِنَّهُ الْحَقُّ

बेशक वह हक़	उस से	शक में	पस तू न हो	तो आग (दोज़ख़) उस का ठिकाना	गिरोहों में

مِنْ رَّبِّكَ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿١٧﴾ وَمَنْ اَظْلَمُ

सब से बड़ा ज़ालिम	और कौन	17	ईमान नहीं लाते	अक्सर लोग	और लेकिन	तेरे रब से

مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا ؕ اُولٰٓئِكَ يُعْرَضُوْنَ عَلٰى رَبِّهِمْ

अपने रब के सामने	पेश किए जाएंगे	यह लोग	झूट	अल्लाह पर	बान्धे	उस से जो

وَيَقُوْلُ الْاَشْهَادُ هٰۤؤُلَآءِ الَّذِيْنَ كَذَبُوْا عَلٰى رَبِّهِمْ ۚ اَلَا

याद रखो	अपने रब पर	झूट बोला	वह जिन्हों ने	यही हैं	गवाह (जमा)	और वह कहेंगे

لَعْنَةُ اللّٰهِ عَلَى الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٨﴾ الَّذِيْنَ يَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ

अल्लाह का रास्ता	से	रोकते हैं	वह लोग जो	18	ज़ालिम (जमा)	पर	अल्लाह की फटकार

وَيَبْغُوْنَهَا عِوَجًا ؕ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ كٰفِرُوْنَ ﴿١٩﴾

19	मुन्किर (जमा)	वह	आख़िरत से	और वह	कजी	और उस मे ढून्डते हैं

क्या वह कहते हैं? कि उस ने इस (क़ुरआन) को खुद घड़ लिया है, आप (स) कह दें तो तुम भी इस जैसी दस (10) सूरतें घड़ी हुई ले आओ और जिस को तुम (मदद के लिए) बुला सको बुला लो अल्लाह के सिवा, अगर तुम सच्चे हो। **(13)**

फिर अगर वह तुम्हारे (उस चैलेंज का) जवाब न दे सकें तो जान लो कि यह तो अल्लाह के इल्म से नाज़िल किया गया है, और यह कि उस के सिवा कोई माबूद नहीं, पस क्या तुम इस्लाम लाते हो? **(14)**

जो कोई चाहता है दुनिया की ज़िन्दगी और उस की ज़ीनत, हम उन के लिए उन के अ़मल इस (दुनिया) में पूरे कर देंगे और उस में उन की कमी न की जाएगी। **(15)**

यही लोग हैं जिन के लिए आख़िरत में आग के सिवा कुछ नहीं, और अकारत गया जो इस (दुनिया) में उन्हों ने किया और जो वह करते थे नाबूद हुए। **(16)**

पस क्या (यह उस के बराबर है) जो अपने रब के खुले रास्ते पर हो और उस के साथ उस (अल्लाह की तरफ़) से गवाह हो, और उस से पहले मूसा (अ) की किताब इमाम (रहनुमा) और रहमत (थी) यही लोग इस (क़ुरआन) पर ईमान लाते हैं और गिरोहों में से जो इस का मुन्किर हो तो दोज़ख़ उस का ठिकाना है, पस तू शक में न हो इस से, बेशक वह तेरे रब (की तरफ़) से हक़ है, लेकिन अक्सर लोग ईमान नहीं लाते। **(17)**

और कौन है उस से बढ़ कर ज़ालिम? जो अल्लाह पर झूट बान्धे, यह लोग अपने रब के सामने पेश किए जाएंगे और गवाह कहेंगे कि यही हैं जिन्हों ने अपने रब पर झूट बोला, याद रखो! ज़ालिमों पर अल्लाह की फटकार है। **(18)**

जो लोग अल्लाह के रास्ते से रोकते हैं, और उस में कजी ढून्डते हैं, और वह आख़िरत के मुन्किर हैं। **(19)**

أُولٰٓـئِكَ لَمْ يَكُوْنُوْا مُعْجِزِيْنَ فِى الْاَرْضِ وَمَا كَانَ لَهُمْ

उन के लिए	और नहीं है	ज़मीन में	आजिज़ करने वाले, थकाने वाले	नहीं हैं	यह लोग

وقف لازم مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ اَوْلِيَآءَ ۘ يُضٰعَفُ لَهُمُ الْعَذَابُ ؕ مَا

न	अ़ज़ाब	उन के लिए	दुगना	हिमायती	कोई	अल्लाह	सिवा	से

كَانُوْا يَسْتَطِيْعُوْنَ السَّمْعَ وَمَا كَانُوْا يُبْصِرُوْنَ ﴿٢٠﴾ اُولٰٓـئِكَ الَّذِيْنَ

वह जिन्हों ने	यही लोग	20	वह देखते थे	और न	सुनना	वह ताक़त रखते थे

خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿٢١﴾ لَا جَرَمَ

शक नहीं	21	वह इफ़तिरा करते थे (झूट बान्धते थे)	जो	उन से	और गुम हो गया	अपनी जानों का (अपना)	नुक़्सान किया

اَنَّهُمْ فِى الْاٰخِرَةِ هُمُ الْاَخْسَرُوْنَ ﴿٢٢﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا

और उन्हों ने अ़मल किए	जो लोग ईमान लाए	बेशक	22	सब से ज़ियादा नुक़्सान उठाने वाले	वह	आख़िरत में	कि वह

الصّٰلِحٰتِ وَاَخْبَتُوْٓا اِلٰى رَبِّهِمْ ۙ اُولٰٓـئِكَ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ۚ هُمْ

उस में	वह	जन्नत वाले	यही लोग	अपने रब के आगे	और आजिज़ी की	नेक

فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٢٣﴾ مَثَلُ الْفَرِيْقَيْنِ كَالْاَعْمٰى وَالْاَصَمِّ وَالْبَصِيْرِ

और देखता	और बहरा	जैसे अन्धा	दोनों फ़रीक़	मिसाल	23	हमेशा रहेंगे

ع ١٦ ٢ ٢ وَالسَّمِيْعِ ؕ هَلْ يَسْتَوِيٰنِ مَثَلًا ؕ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿٢٤﴾ ع وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا

और हम ने भेजा	24	क्या तुम ग़ौर नहीं करते	मिसाल (हालत) में	क्या दोनों बराबर हैं	और सुनता

نُوْحًا اِلٰى قَوْمِهٖٓ ۡ اِنِّىْ لَكُمْ نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٢٥﴾ ۙ اَنْ لَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّا

सिवाए	न परस्तिश करो तुम	कि	25	खुला	डराने वाला	तुम्हारे लिए	बेशक मैं	उस की क़ौम	तरफ़	नूह (अ)

اللّٰهَ ؕ اِنِّىْٓ اَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ اَلِيْمٍ ﴿٢٦﴾ فَقَالَ الْمَلَاُ

सरदार	तो बोले	26	दुख देने वाला दिन	अ़ज़ाब	तुम पर	बेशक मैं डरता हूँ	अल्लाह

الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ مَا نَرٰىكَ اِلَّا بَشَرًا مِّثْلَنَا وَمَا نَرٰىكَ

और हम नहीं देखते तुझे	हमारे अपने जैसा	एक आदमी	मगर	हम तुझे नहीं देखते	उस की क़ौम के	जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)

اتَّبَعَكَ اِلَّا الَّذِيْنَ هُمْ اَرَاذِلُنَا بَادِىَ الرَّاْىِ ۚ وَمَا نَرٰى

हम देखते	और नहीं	सरसरी नज़र से	नीच लोग हम में	वह	वह लोग जो	सिवाए	तेरी पैरवी करें

لَكُمْ عَلَيْنَا مِنْ فَضْلٍ بَلْ نَظُنُّكُمْ كٰذِبِيْنَ ﴿٢٧﴾ قَالَ يٰقَوْمِ اَرَءَيْتُمْ

तुम देखो तो	ऐ मेरी क़ौम	उस ने कहा	27	झूटे	बल्कि हम ख़याल करते हैं तुम्हें	फ़ज़ीलत	कोई	हम पर	तुम्हारे लिए

اِنْ كُنْتُ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّىْ وَاٰتٰىنِىْ رَحْمَةً مِّنْ عِنْدِهٖ

अपने पास से	रहमत	और उस ने दी मुझे	अपने रब से	वाज़ेह दलील	पर	मैं हूँ	अगर

فَعُمِّيَتْ عَلَيْكُمْ ؕ اَنُلْزِمُكُمُوْهَا وَاَنْتُمْ لَهَا كٰرِهُوْنَ ﴿٢٨﴾

28	बेज़ार हो	उस से	और तुम	क्या हम वह तुम्हें ज़बरदस्ती मनवाएं	तुम्हें	वह दिखाई नहीं देती

यह लोग ज़मीन में आजिज़ करने वाले नहीं, और उन के लिए नहीं है अल्लाह के सिवा कोई हिमायती, उन के लिए दुगना अ़ज़ाब है, वह न सुनने की ताक़त रखते थे और न वह देखते थे। (20)

यही लोग हैं जिन्हों ने अपनी जानों का नुक़्सान किया और उन से गुम हो गया जो वह झूट बान्धते थे। (21)

कोई शक नहीं कि वह आख़िरत में सब से ज़ियादा नुक़्सान उठाने वाले हैं। (22)

बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने नेक अ़मल किए, और अपने रब के आगे आजिज़ी की, यही लोग जन्नत वाले हैं, वह उस में हमेशा रहेंगे। (23)

दोनों फ़रीक़ की मिसाल (ऐसी है) जैसे एक अन्धा और बहरा और (दूसरा) देखता और सुनता है, क्या वह दोनों बराबर हैं हालत में? क्या तुम ग़ौर नहीं करते? (24)

और हम ने नूह (अ) को उस की क़ौम की तरफ़ भेजा कि बेशक मैं तुम्हारे लिए (तुम्हें) डराने वाला हूँ खुला (खोल कर) (25)

कि अल्लाह के सिवा किसी की परस्तिश न करो, बेशक मैं तुम पर एक दुख देने वाले दिन के अ़ज़ाब से डरता हूँ। (26)

तो उस क़ौम के वह सरदार जिन्हों ने कुफ़्र किया, बोले हम तुझे नहीं देखते मगर हमारे अपने जैसा एक आदमी, और हम नहीं देखते कि किसी ने तेरी पैरवी की हो उन के सिवा जो हम में नीच लोग हैं (वह भी) सरसरी नज़र से (बे सोचे समझे) और हम नहीं देखते तुम्हारे लिए अपने ऊपर कोई फ़ज़ीलत, बल्कि हम तुम्हें झूटा ख़याल करते हैं। (27)

उस ने कहा, ऐ मेरी क़ौम! देखो तो, अगर मैं वाज़ेह दलील पर हूँ अपने रब (की तरफ़) से और उस ने मुझे अपने पास से रहमत दी है, वह तुम्हें दिखाई नहीं देती, तो क्या हम वह तुम्हें ज़बरदस्ती मनवाएं? और तुम उस से बेज़ार हो। (28)

وَيٰقَوْمِ لَآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مَالًا ۭ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ وَمَآ

और नहीं	अल्लाह पर	मगर	मेरा अजर	नहीं	कुछ माल	इस पर	मैं नहीं मांगता तुम से	और ऐ मेरी क़ौम

اَنَا بِطَارِدِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۭ اِنَّهُمْ مُّلٰقُوْا رَبِّهِمْ وَلٰكِنِّيْٓ اَرٰىكُمْ قَوْمًا

एक क़ौम	देखता हूँ तुम्हें	और लेकिन मैं	अपना रब	मिलने वाले	बेशक वह	वह जो ईमान लाए	मैं हांकने वाला

تَجْهَلُوْنَ ﴿٢٩﴾ وَيٰقَوْمِ مَنْ يَّنْصُرُنِيْ مِنَ اللّٰهِ اِنْ طَرَدْتُّهُمْ ۭ

मैं हांक दूँ उन्हें	अगर	अल्लाह	से	कौन बचाएगा मुझे	और ऐ मेरी क़ौम	29	जहालत करते हो

اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿٣٠﴾ وَلَآ اَقُوْلُ لَكُمْ عِنْدِيْ خَزَاۗىِٕنُ اللّٰهِ وَلَآ اَعْلَمُ

और मैं नहीं जानता	अल्लाह के ख़ज़ाने	मेरे पास	तुम्हें	और मैं नहीं कहता	30	क्या तुम ग़ौर नहीं करते

الْغَيْبَ وَلَآ اَقُوْلُ اِنِّيْ مَلَكٌ وَّلَآ اَقُوْلُ لِلَّذِيْنَ تَزْدَرِيْٓ اَعْيُنُكُمْ

तुम्हारी आँखें	हक़ीर समझती हैं	उन लागों को जिन्हें	और मैं नहीं कहता	फ़रिश्ता	कि मैं	और मैं नहीं कहता	ग़ैब

لَنْ يُّؤْتِيَهُمُ اللّٰهُ خَيْرًا ۭ اَللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ ښ اِنِّيْٓ

बेशक मैं	उन के दिलों में	जो कुछ	ख़ूब जानता है	अल्लाह	कोई भलाई	अल्लाह	हरगिज़ न देगा उन्हें

اِذًا لَّمِنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٣١﴾ قَالُوْا يٰنُوْحُ قَدْ جٰدَلْتَنَا فَاَكْثَرْتَ جِدَالَنَا

हम से झगड़ा किया	सो बहुत	तू ने झगड़ा किया हम से	ऐ नूह (अ)	वह बोले	31	अलबत्ता ज़ालिमों से	उस वक़्त

فَاْتِنَا بِمَا تَعِدُنَآ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿٣٢﴾ قَالَ اِنَّمَا يَاْتِيْكُمْ

सिर्फ़ लाएगा तुम पर	उस ने कहा	32	सच्चे (जमा)	से	अगर तू है	वह जो तू हम से वादा करता है	पस ले आ

بِهِ اللّٰهُ اِنْ شَاۗءَ وَمَآ اَنْتُمْ بِمُعْجِزِيْنَ ﴿٣٣﴾ وَلَا يَنْفَعُكُمْ نُصْحِيْٓ اِنْ

अगर	मेरी नसीहत	और न नफ़ा देगी तुम्हें	33	आजिज़ कर देने वाले	और तुम नहीं	अगर चाहेगा वह	अल्लाह	उस को

اَرَدْتُّ اَنْ اَنْصَحَ لَكُمْ اِنْ كَانَ اللّٰهُ يُرِيْدُ اَنْ يُّغْوِيَكُمْ ۭ هُوَ رَبُّكُمْ ۣ

तुम्हारा रब	वह	कि गुमराह करे तुम्हें	अल्लाह चाहे	है	अगर (जबकि)	तुम्हें	कि मैं नसीहत करूँ	मैं चाहूँ

وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿٣٤﴾ اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ۭ قُلْ اِنِ افْتَرَيْتُهٗ

अगर मैं ने उसे बना लिया है	कह दें	बना लाया है उस को	वह कहते हैं	क्या	34	तुम लौट कर जाओगे	और उसी की तरफ़

فَعَلَيَّ اِجْرَامِيْ وَاَنَا بَرِيْۗءٌ مِّمَّا تُجْرِمُوْنَ ﴿٣٥﴾ وَاُوْحِيَ اِلٰى نُوْحٍ ع ٣ ١١ ٣

नूह (अ) की तरफ़	और वहि भेजी गई	35	तुम गुनाह करते हो	उस से जो	बरी	और मैं	मेरा गुनाह	तो मुझ पर

اَنَّهٗ لَنْ يُّؤْمِنَ مِنْ قَوْمِكَ اِلَّا مَنْ قَدْ اٰمَنَ فَلَا تَبْتَىِٕسْ

पस तू ग़मगीन न हो	ईमान लाचुका	जो	सिवाए	तेरी क़ौम	से	हरगिज़ ईमान न लाएगा	कि वह

بِمَا كَانُوْا يَفْعَلُوْنَ ﴿٣٦﴾ وَاصْنَعِ الْفُلْكَ بِاَعْيُنِنَا وَوَحْيِنَا

और हमारे हुक्म से	हमारे सामने	कश्ती	और तू बना	36	वह करते हैं	उस पर जो

وَلَا تُخَاطِبْنِيْ فِي الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ۚ اِنَّهُمْ مُّغْرَقُوْنَ ﴿٣٧﴾

37	डूबने वाले	बेशक वह	जिन लोगों ने ज़ुल्म किया (ज़ालिम)	में	और न बात करना मुझ से

और ऐ मेरी क़ौम! मैं तुम से उस पर कुछ माल नहीं मांगता, मेरा अज़र तो सिर्फ़ अल्लाह पर है, और जो ईमान लाए हैं मैं उन्हें हांकने वाला (दूर करने वाला) नहीं, बेशक वह अपने रब से मिलने वाले हैं, लेकिन मैं देखता हूँ कि तुम एक क़ौम हो कि जहालत करते हो। (29) और ऐ मेरी क़ौम! अगर मैं उन्हें हांक दूँ तो मुझे अल्लाह से कौन बचा लेगा? क्या तुम ग़ौर नहीं करते? (30) और मैं नहीं कहता कि मेरे पास अल्लाह के ख़ज़ाने हैं और न मैं ग़ैब (की बातें) जानता हूँ, और मैं नहीं कहता कि मैं फ़रिश्ता हूँ, और जिन लोगों को तुम्हारी आँखें हक़ीर समझती हैं (तुम हक़ीर समझते हो) मैं नहीं कहता अल्लाह उन्हें हरगिज़ कोई भलाई न देगा, जो कुछ उन के दिलों में है अल्लाह ख़ूब जानता है (अगर एसा कहूँ तो) उस वक़्त अलबत्ता मैं ज़ालिमों से हूंगा। (31) वह बोले ऐ नूह (अ)! तू ने हम से झगड़ा किया, सो हम से बहुत झगड़ा किया, पस वह (अ़ज़ाब) ले आ जिस का तू हम से वादा करता है, अगर तू सच्चों में से है। (32) उस ने कहा तुम पर लाएगा सिर्फ़ अल्लाह उस (अ़ज़ाब) को अगर वह चाहेगा, और तुम आजिज़ कर देने वाले नहीं हो। (33) और मेरी नसीहत तुम्हें नफ़ा न देगी अगर मैं चाहूँ कि मैं तुम्हें नसीहत करूँ जब कि अल्लाह चाहे कि तुम्हें गुमराह करे, वही तुम्हारा रब है, और उसी की तरफ़ तुम लौट कर जाओगे। (34) क्या वह कहते हैं इस (कुरआन) को बना लाया है? आप (स) कह दें अगर मैं ने इस को बना लिया है तो मुझ पर है मेरा गुनाह, और मैं उस से बरी हूँ जो तुम गुनाह करते हो। (35) और नूह (अ) की तरफ़ वहि की गई कि तेरी क़ौम से (अब) हरगिज़ कोई ईमान न लाएगा, सिवाए उस के जो ईमान ला चुका, पस तू उस पर ग़मगीन न हो जो वह करते हैं। (36) और तू हमारे सामने कश्ती बना और हमारे हुक्म से और ज़ालिमों (के हक़) में मुझ से बात न करना, बेशक वह डूबने वाले हैं। (37)

وَيَصْنَعُ الْفُلْكَ ۫ وَكُلَّمَا مَرَّ عَلَيْهِ مَلَاٌ مِّنْ قَوْمِهٖ سَخِرُوْا مِنْهُ ؕ

और वह बनाता था	कश्ती	और जब भी	गुज़रते	उस पर	सरदार	से (के)	उस की क़ौम	वह हँसते	उस से (पर)

قَالَ اِنْ تَسْخَرُوْا مِنَّا فَاِنَّا نَسْخَرُ مِنْكُمْ كَمَا تَسْخَرُوْنَ ؕ ﴿۳۸﴾ فَسَوْفَ

उस ने कहा	अगर	तुम हँस्ते हो	हम से (पर)	तो बेशक हम	हसेंगे	तुम से (पर)	जैसे	तुम हंसते हो	38	सो अ़नक़रीब

تَعْلَمُوْنَ ۙ مَنْ يَّاْتِيْهِ عَذَابٌ يُّخْزِيْهِ وَيَحِلُّ عَلَيْهِ عَذَابٌ مُّقِيْمٌ ﴿۳۹﴾

तुम जान लोगे	किस पर आता है	ऐसा अ़ज़ाब	उस को रुस्वा करे	और उतरता है	उस पर	अ़ज़ाब	दाइमी	39

حَتّٰٓى اِذَا جَآءَ اَمْرُنَا وَفَارَ التَّنُّوْرُ ۙ قُلْنَا احْمِلْ فِيْهَا مِنْ

यहां तक कि	जब आया	हमारा हुक्म	और जोश मारा	तन्नूर	हम ने कहा	चढ़ा ले	उस में	से

كُلٍّ زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ وَاَهْلَكَ اِلَّا مَنْ سَبَقَ عَلَيْهِ الْقَوْلُ

हर एक जोड़ा	दो (नर मादा)	और अपने घर वाले	मगर	जो	हो चुका	उस पर	हुक्म

وَمَنْ اٰمَنَ ؕ وَمَآ اٰمَنَ مَعَهٗٓ اِلَّا قَلِيْلٌ ﴿۴۰﴾ وَقَالَ ارْكَبُوْا فِيْهَا

और जो	ईमान लाया	और न	ईमान लाए	उस पर	मगर थोड़े	40	और उस ने कहा	सवार हो जाओ	इस में

بِسْمِ اللّٰهِ مَجْرٖىهَا وَمُرْسٰىهَا ؕ اِنَّ رَبِّيْ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۴۱﴾ وَهِيَ تَجْرِيْ

अल्लाह के नाम से	उस का चलना	और उसका ठहरना	बेशक	मेरा रब	अलबत्ता बख़्शने वाला	निहायत मेहरबान	41	और वह	चली

بِهِمْ فِيْ مَوْجٍ كَالْجِبَالِ ۫ وَنَادٰى نُوْحُ ۨ ابْنَهٗ وَكَانَ فِيْ مَعْزِلٍ

उन को ले कर	लहरों में	पहाड़ जैसी	और पुकारा	नूह (अ)	अपना बेटा	और था	किनारे में

يّٰبُنَيَّ ارْكَبْ مَّعَنَا وَلَا تَكُنْ مَّعَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿۴۲﴾ قَالَ سَاٰوِيْٓ

ऐ मेरे बेटे	सवार हो जा	हमारे साथ	और न रहो	काफ़िरों के साथ	42	उस ने कहा	मैं जल्द पनाह ले लेता हूँ

اِلٰى جَبَلٍ يَّعْصِمُنِيْ مِنَ الْمَآءِ ؕ قَالَ لَا عَاصِمَ الْيَوْمَ مِنْ اَمْرِ اللّٰهِ

किसी पहाड़ की तरफ़	वह बचा लेगा मुझे	पानी से	उस ने कहा	कोई बचाने वाला नहीं	आज	से	अल्लाह का हुक्म

اِلَّا مَنْ رَّحِمَ ۚ وَحَالَ بَيْنَهُمَا الْمَوْجُ فَكَانَ مِنَ الْمُغْرَقِيْنَ ﴿۴۳﴾

सिवाए	जिस पर वह रहम करे	और आगई	उन के दरमियान	मौज	तो वह हो गया	से	डूबने वाले	43

وَقِيْلَ يٰٓاَرْضُ ابْلَعِيْ مَآءَكِ وَيٰسَمَآءُ اَقْلِعِيْ وَغِيْضَ الْمَآءُ

और कहा गया	ऐ ज़मीन	निगल ले	अपना पानी	और ऐ आस्मान	थम जा	और खुश्क कर दिया गया	पानी

وَقُضِيَ الْاَمْرُ وَاسْتَوَتْ عَلَى الْجُوْدِيِّ وَقِيْلَ بُعْدًا لِّلْقَوْمِ

और पूरा हो चुका (तमाम हो गया)	काम	और जा लगी	जूदी पहाड़ पर	और कहा गया	दूरी	लोगों के लिए

الظّٰلِمِيْنَ ﴿۴۴﴾ وَنَادٰى نُوْحٌ رَّبَّهٗ فَقَالَ رَبِّ اِنَّ ابْنِيْ

ज़ालिम (जमा)	44	और पुकारा	नूह (अ)	अपना रब	पस उस ने कहा	ऐ मेरे रब	बेशक	मेरा बेटा

مِنْ اَهْلِيْ وَاِنَّ وَعْدَكَ الْحَقُّ وَاَنْتَ اَحْكَمُ الْحٰكِمِيْنَ ﴿۴۵﴾

मेरे घर वालों में से	और बेशक	तेरा वादा	सच्चा	और तू	सब से बड़ा हाकिम	हाकिम (जमा)	45

قرأ حفص بفتح الميم وامالة الراء ١٢

الربع

और वह (नूह अ) कश्ती बनाता था और जब भी उस की क़ौम के सरदार उस (के पास) से गुज़रते तो वह उस पर हँस्ते, उस (नूह अ) ने कहा अगर तुम हम पर हँस्ते हो तो बेशक हम (भी) तुम पर हँसेंगे जैसे तुम हँस्ते हो। (38)
सो अ़नक़रीब तुम जान लोगे किस पर ऐसा अ़ज़ाब आता है जो उस को रुस्वा करे और उतरता है उस पर दाइमी अ़ज़ाब। (39)
यहां तक कि जब हमारा हुक्म आया, और तन्नूर ने जोश मारा (उबल पड़ा) हम ने कहा उस (कश्ती) में चढ़ा ले हर एक का जोड़ा, नर और मादा, और अपने घर वाले उस के सिवाए जिस पर (ग़र्क़ाबी का) हुक्म हो चुका है और जो ईमान लाया (उसे भी सवार कर ले) और उस पर ईमान न लाए थे मगर थोड़े। (40)
और उस ने कहा इस में सवार हो जाओ, अल्लाह के नाम से है इस का चलना और इस का ठहरना, बेशक अलबत्ता मेरा रब बख़्शने वाला, निहायत मेहरबान है। (41)
और वह (कश्ती) उन को ले कर पहाड़ जैसी लहरों में चली और नूह (अ) ने अपने बेटे को पुकारा, और वह (उस से) किनारे था, ऐ मेरे बेटे! हमारे साथ सवार हो जा, और काफ़िरों के साथ न रहो। (42)
उस ने कहा मैं किसी पहाड़ की तरफ़ जल्दी पनाह ले लेता हूँ, वह मुझे पानी से बचा लेगा, उस ने कहा आज कोई बचाने वाला नहीं अल्लाह के हुक्म से, सिवाए उस के जिस पर वह रह्म करे, और उन के दरमियान मोज आगई (हाइल हो गई) तो वह भी डूबने वालों में (शामिल) हो गया। (43)
और कहा गया ऐ ज़मीन! अपना पानी निगल ले, और ऐ आस्मान थम जा, और पानी को ख़ुश्क कर दिया गया, और तमाम हो गया काम, और (कश्ती) जा लगी जूदी पहाड़ पर, और कहा दूरी (लानत) हो ज़ालिम लोगों के लिए। (44)
और पुकारा नूह (अ) ने अपने रब को, पस उस ने कहा ऐ मेरे रब! बेशक मेरा बेटा मेरे घर वालों में से है, और बेशक तेरा वादा सच्चा है, और तू हाकिमों में सब से बड़ा हाकिम है। (45)

قَالَ يٰنُوۡحُ اِنَّهٗ لَيۡسَ مِنۡ اَهۡلِكَ ۚ اِنَّهٗ عَمَلٌ غَيۡرُ صَالِحٍ ۖ

नाशाइस्ता	अ़मल	बेशक वह	तेरे घर वाले	से	नहीं	बेशक वह	ऐ नूह (अ)	उस ने फ़रमाया

فَلَا تَسۡـَٔلۡنِ مَا لَيۡسَ لَكَ بِهٖ عِلۡمٌ ؕ اِنِّىۡۤ اَعِظُكَ اَنۡ تَكُوۡنَ مِنَ

से	तू हो जाए	कि	बेशक मैं नसीहत करता हूँ तुझे	इल्म	उस का	तुझ को	ऐसी बात कि नहीं	सो मुझ से सवाल न कर

الۡجٰهِلِيۡنَ ﴿٤٦﴾ قَالَ رَبِّ اِنِّىۡۤ اَعُوۡذُ بِكَ اَنۡ اَسۡـَٔلَكَ مَا لَيۡسَ لِىۡ

मुझे	ऐसी बात कि नहीं	मैं सवाल करूँ तुझ से	कि	तुझ से	मैं पनाह चाहता हूँ	ऐ मेरे रब	उस ने कहा	46	नादान (जमा)

بِهٖ عِلۡمٌ ؕ وَاِلَّا تَغۡفِرۡ لِىۡ وَتَرۡحَمۡنِىۡۤ اَكُنۡ مِّنَ الۡخٰسِرِيۡنَ ﴿٤٧﴾

47	नुक़्सान पाने वाले	से	हो जाऊं	और तू मुझ पर रह्म न करे	और अगर तू न बख़्शे मुझे	इल्म	उस का

قِيۡلَ يٰنُوۡحُ اهۡبِطۡ بِسَلٰمٍ مِّنَّا وَبَرَكٰتٍ عَلَيۡكَ وَعَلٰٓى اُمَمٍ

और गिरोह पर	तुझ पर	और बरकतें	हमारी तरफ़ से	सलामती के साथ	उतर जाओ तुम	ऐ नूह (अ)	कहा गया

مِّمَّنۡ مَّعَكَ ؕ وَاُمَمٌ سَنُمَتِّعُهُمۡ ثُمَّ يَمَسُّهُمۡ مِّنَّا عَذَابٌ اَلِيۡمٌ ﴿٤٨﴾

48	दर्दनाक	अ़ज़ाब	हम से	उन्हें पहुँचेगा	फिर	हम उन्हें जल्द फ़ाइदा देंगे	और कुछ गिरोह	तेरे साथ	से - जो

تِلۡكَ مِنۡ اَنۡۢبَآءِ الۡغَيۡبِ نُوۡحِيۡهَاۤ اِلَيۡكَ ۚ مَا كُنۡتَ تَعۡلَمُهَاۤ اَنۡتَ

तुम	तुम उन को जानते थे	न	तुम्हारी तरफ़	हम वहि करते हैं उसे	ग़ैब की ख़बरें	से	यह

وَلَا قَوۡمُكَ مِنۡ قَبۡلِ هٰذَا ؕ فَاصۡبِرۡ ؕ اِنَّ الۡعَاقِبَةَ لِلۡمُتَّقِيۡنَ ﴿٤٩﴾

49	परहेज़गारों के लिए	अच्छा अन्जाम	बेशक	पस सब्र करो	इस से पहले	से	तुम्हारी क़ौम	और न

وَاِلٰى عَادٍ اَخَاهُمۡ هُوۡدًا ؕ قَالَ يٰقَوۡمِ اعۡبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمۡ مِّنۡ اِلٰهٍ

कोई माबूद	तुम्हारा नहीं	अल्लाह	तुम इबादत करो	ऐ मेरी क़ौम	उस ने कहा	हूद (अ)	उन के भाई	क़ौमे आ़द	और तरफ़

غَيۡرُهٗ ؕ اِنۡ اَنۡتُمۡ اِلَّا مُفۡتَرُوۡنَ ﴿٥٠﴾ يٰقَوۡمِ لَاۤ اَسۡـَٔلُكُمۡ عَلَيۡهِ

उस पर	मैं तुम से नहीं मांगता	ऐ मेरी क़ौम	50	झूट बान्धते हो	मगर (सिर्फ़)	तुम	नहीं	उस के सिवा

اَجۡرًا ؕ اِنۡ اَجۡرِىَ اِلَّا عَلَى الَّذِىۡ فَطَرَنِىۡ ؕ اَفَلَا تَعۡقِلُوۡنَ ﴿٥١﴾

51	क्या फिर तुम समझते नहीं	जिस ने मुझे पैदा किया	पर	मगर (सिर्फ़)	मेरा सिला	नहीं	कोई अजर (सिला)

وَيٰقَوۡمِ اسۡتَغۡفِرُوۡا رَبَّكُمۡ ثُمَّ تُوۡبُوۡۤا اِلَيۡهِ يُرۡسِلِ السَّمَآءَ

आस्मान	वह भेजेगा	उसी की तरफ़ रुजूअ़ करो	फिर	अपना रब	तुम बख़्शिश मांगो	और ऐ मेरी क़ौम

عَلَيۡكُمۡ مِّدۡرَارًا وَّيَزِدۡكُمۡ قُوَّةً اِلٰى قُوَّتِكُمۡ وَلَا تَتَوَلَّوۡا

और रूगर्दानी न करो	तुम्हारि क़ुव्वत	तरफ़ (पर)	क़ुव्वत	और तुम्हें बढ़ाएगा	ज़ोर की बारिश	तुम पर

مُجۡرِمِيۡنَ ﴿٥٢﴾ قَالُوۡا يٰهُوۡدُ مَا جِئۡتَنَا بِبَيِّنَةٍ وَّمَا نَحۡنُ

हम	और नहीं	कोई दलील (सनद) ले कर	तू नहीं आया हमारे पास	ऐ हूद (अ)	वह बोले	52	मुज्रिम हो कर

بِتَارِكِىۡۤ اٰلِهَتِنَا عَنۡ قَوۡلِكَ وَمَا نَحۡنُ لَكَ بِمُؤۡمِنِيۡنَ ﴿٥٣﴾

53	ईमान लाने वाले	तेरे लिए (तुझ पर)	हम	और नहीं	तेरे कहने से	अपने माबूद	छोड़ने वाले

ع ٤

معانقة ٩ عند المتأخرين ١٢

الوقف على فاصبر احسن واليق ١٢

उस ने फ़रमाया, ऐ नूह (अ)! बेशक वह तेरे घर वालों में से नहीं, बेशक उस के अ़मल नाशाइस्ता हैं, सो मुझ से ऐसी बात का सवाल न कर जिस का तुझे इल्म नहीं, बेशक मैं तुझे नसीहत करता हूँ कि तू नादानों में से (न) हो जाए, (46)

उस ने कहा ऐ मेरे रब! मैं तेरी पनाह चाहता हूँ कि मैं तुझ से ऐसी बात का सवाल करूँ जिस का मुझे इल्म न हो, और अगर तू मुझे न बख़्शे और मुझ पर रह्म न करे तो मैं नुक़्सान पाने वालों में से हो जाऊं। (47)

कहा गया, ऐ नूह (अ)! हमारी तरफ़ से सलामती के साथ उतर जाओ और बरकतें हों तुझ पर, और उन गिरोहों पर जो तेरे साथ हैं और कुछ गिरोह हैं कि हम उन्हें जल्द (दुनिया में) फ़ाइदा देंगे, फिर उन्हें हम से पहुँचेगा अ़ज़ाब दर्दनाक। (48)

यह ग़ैब की ख़बरें जो हम तुम्हारी तरफ़ वहि करते हैं, न तुम उन को जानते थे इस से पहले और न तुम्हारी क़ौम (जानती थी), पस सब्र करो, बेशक परहेज़गारों का अन्जाम अच्छा है। (49)

क़ौमे आ़द की तरफ़ उन के भाई हूद (अ) (आए), उस ने कहा ऐ मेरी क़ौम! अल्लाह की इबादत करो, उस के सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं, तुम सिर्फ़ झूट बान्धते हो (इफ़्तिरा करते हो) (50)

ऐ मेरी क़ौम! उस पर मैं तुम से कोई सिला नहीं मांगता, मेरा सिला सिर्फ़ उसी पर है जिस ने मुझे पैदा किया, फिर क्या तुम समझते नहीं? (51)

और ऐ मेरी क़ौम! अपने रब से बख़्शिश मांगो, फिर उसी की तरफ़ रुजूअ़ करो (तौबा करो), वह तुम पर आस्मान से ज़ोर की बारिश भेजेगा, और तुम्हें क़ुव्वत पर क़ुव्वत बढ़ाएगा और मुज्रिम हो कर रूगर्दानी न करो। (52)

वह बोले ऐ हूद (अ)! तू हमारे पास कोई सनद ले कर नहीं आया, और हम छोड़ने वाले नहीं अपने माबूदों को तेरे कहने से, और हम तुझ पर ईमान लाने वाले नहीं। (53)

اِنْ نَّقُوْلُ اِلَّا اعْتَرٰىكَ بَعْضُ اٰلِهَتِنَا بِسُوْٓءٍ ؕ قَالَ اِنِّيْٓ اُشْهِدُ اللّٰهَ

अल्लाह	गवाह करता हूँ	बेशक मैं	उस ने कहा	बुरी तरह	हमारा माबूद	किसी	तुझे आसेब पहुँचाया है	मगर	हम कहते हैं	नहीं

وَاشْهَدُوْٓا اَنِّيْ بَرِيْٓءٌ مِّمَّا تُشْرِكُوْنَ ۙ﴿٥٤﴾ مِنْ دُوْنِهٖ فَكِيْدُوْنِيْ جَمِيْعًا

सब	सो मक्र (बुरी तदबीर) करो मेरे बारे में	उस के सिवा	54	तुम शरीक करते हो	उन से	बेज़ार हूँ	बेशक मैं	और तुम गवाह रहो

ثُمَّ لَا تُنْظِرُوْنِ ﴿٥٥﴾ اِنِّيْ تَوَكَّلْتُ عَلَى اللّٰهِ رَبِّيْ وَرَبِّكُمْ ؕ مَا مِنْ دَآبَّةٍ

कोई	चलने वाला	नहीं	और तुम्हारा रब	मेरा रब	अल्लाह पर	मैं ने भरोसा किया	बेशक मैं	55	मुझे मोहलत न दो	फिर

اِلَّا هُوَ اٰخِذٌۢ بِنَاصِيَتِهَا ؕ اِنَّ رَبِّيْ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٥٦﴾ فَاِنْ

फिर अगर	56	सीधा	रास्ता	पर	मेरा रब	बेशक	उस को चोटी से	पकड़ने वाला	वह	मगर

تَوَلَّوْا فَقَدْ اَبْلَغْتُكُمْ مَّآ اُرْسِلْتُ بِهٖٓ اِلَيْكُمْ ؕ وَيَسْتَخْلِفُ رَبِّيْ قَوْمًا

कोई और क़ौम	मेरा रब	और क़ाइम मुक़ाम कर देगा	तुम्हारी तरफ़	उस के साथ	जो मुझे भेजा गया	मैं ने तुम्हें पहुँचा दिया	तुम रूगर्दानी करोगे

غَيْرَكُمْ ۚ وَلَا تَضُرُّوْنَهٗ شَيْــًٔا ؕ اِنَّ رَبِّيْ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ حَفِيْظٌ ﴿٥٧﴾

57	निगहबान	हर शै	पर	मेरा रब	बेशक	कुछ	और तुम न बिगाड़ सकोगे उस का	तुम्हारे सिवा

وَلَمَّا جَآءَ اَمْرُنَا نَجَّيْنَا هُوْدًا وَّالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا ۚ

अपनी	रहमत से	उस के साथ	और वह लोग जो ईमान लाए	हूद (अ)	हम ने बचा लिया	हमारा हुक्म	आया	और जब

وَنَجَّيْنٰهُمْ مِّنْ عَذَابٍ غَلِيْظٍ ﴿٥٨﴾ وَتِلْكَ عَادٌ ۟ جَحَدُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ

अपना रब	आयतों का	उन्हों ने इन्कार किया	आ़द	और यह	58	सख़्त	अ़ज़ाब	से	और हम ने उन्हें बचा लिया

وَعَصَوْا رُسُلَهٗ وَاتَّبَعُوْٓا اَمْرَ كُلِّ جَبَّارٍ عَنِيْدٍ ﴿٥٩﴾ وَاُتْبِعُوْا فِيْ

में	और उन के पीछे लगादी गई	59	ज़िद्दी	हर सरकश	हुक्म	और पैरवी की	अपने रसूल	और उन्हों ने नाफ़रमानी की

هٰذِهِ الدُّنْيَا لَعْنَةً وَّيَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ اَلَآ اِنَّ عَادًا كَفَرُوْا رَبَّهُمْ ؕ

अपना रब	वह मुन्किर हुए	आ़द	बेशक	याद रखो	और रोज़े क़ियामत	लानत	इस दुनिया

وقف لازم ع ٥ (٢١) ٥
اَلَا بُعْدًا لِّعَادٍ قَوْمِ هُوْدٍ ﴿٦٠﴾ وَاِلٰى ثَمُوْدَ اَخَاهُمْ صٰلِحًا ۘ قَالَ يٰقَوْمِ

ऐ मेरी क़ौम	उस ने कहा	सालेह (अ)	उन का भाई	और समूद की तरफ़	60	हूद की क़ौम	आ़द के लिए	फटकार	याद रखो

اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ هُوَ اَنْشَاَكُمْ مِّنَ الْاَرْضِ

ज़मीन से	पैदा किया तुम्हें	वह - उस	उस के सिवा	कोई माबूद	तुम्हारे लिए	नहीं	अल्लाह की इबादत करो

وَاسْتَعْمَرَكُمْ فِيْهَا فَاسْتَغْفِرُوْهُ ثُمَّ تُوْبُوْٓا اِلَيْهِ ؕ اِنَّ رَبِّيْ قَرِيْبٌ

नज़्दीक	मेरा रब	बेशक	रुजूअ़ करो उस की तरफ़ (तौबा करो)	फिर	सो उस से बख़्शिश मांगो	उस में	और बसाया तुम्हें उस ने

مُّجِيْبٌ ﴿٦١﴾ قَالُوْا يٰصٰلِحُ قَدْ كُنْتَ فِيْنَا مَرْجُوًّا قَبْلَ هٰذَآ اَتَنْهٰىنَآ

क्या तू हमें मना करता है	इस से क़ब्ल	मरकज़े उम्मीद	हम में (हमारे दरमियान)	तू था	ऐ सालेह (अ)	वह बोले	61	क़ुबूल करने वाला

اَنْ نَّعْبُدَ مَا يَعْبُدُ اٰبَآؤُنَا وَاِنَّنَا لَفِيْ شَكٍّ مِّمَّا تَدْعُوْنَآ اِلَيْهِ مُرِيْبٍ ﴿٦٢﴾

62	क़वी शुबाह में	उस की तरफ़	तू हमें बुलाता है	उस से जो	शक में हैं	और बेशक हम	हमारे बाप दादा	उसे जिस की परस्तिश करते थे	कि हम परस्तिश करें

हम यही कहते हैं कि तुझे आसेब पहुँचाया है हमारे किसी माबूद ने बुरी तरह, उस ने कहा बेशक मैं अल्लाह को गवाह करता हूँ और तुम (भी) गवाह रहो, मैं उन से बेज़ार हूँ जिन को तुम शरीक करते हो (54) उस के सिवा, सो मेरे बारे में सब मक्र (बुरी तदबीर) कर लो, फिर मुझे मोहलत न दो। (55) मैं ने अल्लाह पर भरोसा किया (जो) मेरा रब है और तुम्हारा रब है, कोई चलने (फिरने) वाला नहीं मगर वह उस को चोटी से पकड़ने वाला है (क़ब्ज़े में लिए हुए है) बेशक मेरा रब है रास्ते पर सीधे। (56) फिर अगर तुम रूगर्दानी करोगे तो जिस के साथ मुझे तुम्हारी तरफ़ भेजा गया वह मैं तुम्हें पहुँचा चुका, और क़ाइम मुक़ाम कर देगा मेरा रब तुम्हारे सिवा किसी और क़ौम को, और तुम उस का कुछ न बिगाड़ सकोगे, बेशक मेरा रब हर शै पर निगहबान है। (57) और जब हमारा हुक्म आया, हम ने हूद (अ) को और जो लोग उस के साथ ईमान लाए अपनी रहमत से बचा लिया, और हम ने उन्हें बचा लिया सख़्त अ़ज़ाब से। (58) और यह आ़द थे और उन्हों ने अपने रब की आयतों का इन्कार किया, और अपने रसूलों की नाफ़रमानी की, और हर सरकश ज़िद्दी की पैरवी की। (59) और लानत उन के पीछे लगादी गई, इस दुनिया में और रोज़े क़ियामत, याद रखो! आ़द अपने रब के मुन्किर हुए, याद रखो! हूद (अ) की क़ौम आ़द पर फटकार है। (60) और समूद की तरफ़ उन के भाई सालेह (अ) को (भेजा), उस ने कहा ऐ मेरी क़ौम! अल्लाह की इबादत करो, उस के सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं, उस ने तुम्हें ज़मीन से पैदा किया, और तुम्हें उस में बसाया, पस उस से बख़्शिश मांगो, फिर उस से तौबा करो, बेशक मेरा रब नज़्दीक है, क़ुबूल करने वाला है। (61) वह बोले ऐ सालेह (अ)! तू हमारे दरमियान इस से क़ब्ल मरकज़े उम्मीद था (तुझ से बड़ी उम्मीदें थीं) क्या तू हमें मना करता है कि हम उन की परस्तिश (न) करें जिन की हमारे बाप दादा परस्तिश करते थे, तो जिस की तरफ़ तू हमें बुलाता है उस में हम क़वी शुबाह में हैं। (62)

قَالَ يٰقَوْمِ اَرَءَيْتُمْ اِنْ كُنْتُ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّىْ وَاٰتٰىنِىْ مِنْهُ

अपनी तरफ़ से	और उस ने मुझे दी	अपने रब से	रौशन दलील पर	अगर मैं हूँ	क्या देखते हो तुम	ऐ मेरी क़ौम	उस ने कहा

رَحْمَةً فَمَنْ يَّنْصُرُنِىْ مِنَ اللّٰهِ اِنْ عَصَيْتُهٗ فَمَا تَزِيْدُوْنَنِىْ غَيْرَ

सिवाए	तुम मेरे लिए बढ़ाते	तो नहीं	मैं उस की नाफ़रमानी करूँ	अगर	अल्लाह से	मेरी मदद करेगा (बचाएगा)	तो कौन	रहमत

تَخْسِيْرٍ ﴿٦٣﴾ وَيٰقَوْمِ هٰذِهٖ نَاقَةُ اللّٰهِ لَكُمْ اٰيَةً فَذَرُوْهَا تَاْكُلْ فِىْٓ

में	खाए	पस उस को छोड़ दो	निशानी	तुम्हारे लिए	अल्लाह की ऊंटनी	यह	और ऐ मेरी क़ौम	63	नुक़्सान

اَرْضِ اللّٰهِ وَلَا تَمَسُّوْهَا بِسُوْٓءٍ فَيَاْخُذَكُمْ عَذَابٌ قَرِيْبٌ ﴿٦٤﴾

64	क़रीब (बहुत जल्द)	अ़ज़ाब	पस तुम्हें पकड़ लेगा	बुराई से	और उस को न छुओ तुम	अल्लाह की ज़मीन

فَعَقَرُوْهَا فَقَالَ تَمَتَّعُوْا فِىْ دَارِكُمْ ثَلٰثَةَ اَيَّامٍ ؕ ذٰلِكَ وَعْدٌ

वादा	यह	तीन दिन	अपने घरों में	बरत लो	उस ने कहा	उन्हों ने उस की कूंचें काट दीं

غَيْرُ مَكْذُوْبٍ ﴿٦٥﴾ فَلَمَّا جَآءَ اَمْرُنَا نَجَّيْنَا صٰلِحًا وَّالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

और वह लोग जो ईमान लाए	सालेह (अ)	हम ने बचा लिया	हमारा हुक्म	आया	फिर जब	65	न झूटा होने वाला

مَعَهٗ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا وَمِنْ خِزْىِ يَوْمِىِٕذٍ ؕ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ الْقَوِىُّ الْعَزِيْزُ ﴿٦٦﴾

66	ग़ालिब	क़वी	वह	तुम्हारा रब	बेशक	उस दिन की	और रुस्वाई से	अपनी रहमत से	उस के साथ

وَاَخَذَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوا الصَّيْحَةُ فَاَصْبَحُوْا فِىْ دِيَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ ﴿٦٧﴾

67	औन्धे पड़े रह गए	अपने घर	में	पस उन्हों ने सुबह की	चिंघाड़	वह जिन्हों ने ज़ुल्म किया (ज़ालिम)	और आ पकड़ा

كَاَنْ لَّمْ يَغْنَوْا فِيْهَا ؕ اَلَآ اِنَّ ثَمُوْدَا۟ كَفَرُوْا رَبَّهُمْ ؕ اَلَا بُعْدًا

फटकार	याद रखो	अपने रब के	मुन्किर हुए	समूद	बेशक	याद रखो	उस में	न बसे थे	गोया

لِّثَمُوْدَ ﴿٦٨﴾ وَلَقَدْ جَآءَتْ رُسُلُنَآ اِبْرٰهِيْمَ بِالْبُشْرٰى قَالُوْا سَلٰمًا ؕ ع ٨ ٦ ٦

सलाम	वह बोले	ख़ुशख़बरी ले कर	इब्राहीम (अ)	हमारे फ़रिश्ते	और अलबत्ता आए	68	समूद पर

قَالَ سَلٰمٌ فَمَا لَبِثَ اَنْ جَآءَ بِعِجْلٍ حَنِيْذٍ ﴿٦٩﴾ فَلَمَّا رَآٰ اَيْدِيَهُمْ

उस ने देखे उन के हाथ	फिर जब	69	भुना हुआ	एक बछड़ा ले आया	कि	फिर उस ने देर न की	सलाम	उस ने कहा

لَا تَصِلُ اِلَيْهِ نَكِرَهُمْ وَاَوْجَسَ مِنْهُمْ خِيْفَةً ؕ قَالُوْا لَا تَخَفْ

तुम डरो मत	वह बोले	ख़ौफ़	उन से	और महसूस किया	वह उन से डरा	उस की तरफ़	नहीं पहुँचते

اِنَّآ اُرْسِلْنَآ اِلٰى قَوْمِ لُوْطٍ ﴿٧٠﴾ وَامْرَاَتُهٗ قَآئِمَةٌ فَضَحِكَتْ فَبَشَّرْنٰهَا

सो हम ने उसे ख़ुशख़बरी दी	तो वह हँस पड़ी	खड़ी हुई	और उस की बीवी	70	क़ौमे लूत	तरफ़	बेशक हम भेजे गए हैं

بِاِسْحٰقَ وَمِنْ وَّرَآءِ اِسْحٰقَ يَعْقُوْبَ ﴿٧١﴾ قَالَتْ يٰوَيْلَتٰٓى ءَاَلِدُ

क्या मेरे बच्चा होगा	ऐ ख़राबी (अए है)	वह बोली	71	याक़ूब (अ)	इसहाक़ (अ)	और से (के) बाद	इसहाक़ (अ) की

وَاَنَا عَجُوْزٌ وَّهٰذَا بَعْلِىْ شَيْخًا ؕ اِنَّ هٰذَا لَشَىْءٌ عَجِيْبٌ ﴿٧٢﴾

72	अ़जीब	एक चीज़ (बात)	यह	बेशक	बूढ़ा	मेरा ख़ावन्द	और यह	बुढ़या	हालांकि मैं

उस ने कहा, ऐ मेरी क़ौम! तुम क्या देखते हो (भला देखो तो) अगर मैं अपने रब की तरफ़ से रौशन दलील पर हूँ, और उस ने मुझे अपनी तरफ़ से रहमत दी है तो अगर मैं उस की नाफ़रमानी करूँ, मुझे अल्लाह से कौन बचाएगा? तुम मेरे लिए नुक़्सान के सिवा कुछ नहीं बढ़ाते। (63)

और ऐ मेरी क़ौम! यह अल्लाह की ऊंटनी है, तुम्हारे लिए निशानी, पस उसे छोड़ दो कि अल्लाह की ज़मीन में खाती (फिरे) और उस को न छुओ (न पहुँचाओ) कोई बुराई (नुक़्सान) पस तुम्हें बहुत जल्द अ़ज़ाब पकड़लेगा। (64)

फिर उन्हों ने उस की कूंचें काट दीं तो उस (सालेह अ) ने कहा, तुम अपने घरों में बरत लो तीन दिन और, यह झूटा न होने वाला वादा है (पूरा हो कर रहेगा)। (65)

फिर जब हमारा हुक्म आया हम ने सालेह (अ) को बचा लिया और उन लोगों को जो उस के साथ ईमान लाए अपनी रहमत (के ज़रीए), और उस दिन की रुस्वाई से, बेशक तुम्हारा रब क़वी, ग़ालिब है। (66)

और ज़ालिमों को चिंघाड़ ने आ पकड़ा, पस उन्हों ने सुबह की (सुबह के वक़्त) अपने घरों में औन्धे पड़े रह गए। (67)

गोया वह कभी यहां बसे ही न थे, याद रखो! बेशक क़ौमे समूद अपने रब के मुन्किर हुए, याद रखो! समूद पर फटकार है। (68)

और हमारे फ़रिश्ते अलबत्ता इब्राहीम (अ) के पास ख़ुशख़बरी ले कर आए, वह सलाम बोले, उस (इब्राहीम अ) ने सलाम कहा, फिर उस ने देर न की एक भुना हुआ बछड़ा ले आया। (69)

फिर जब उस (इब्राहीम अ) ने देखा कि उन के हाथ खाने की तरफ़ नहीं पहुँचते तो वह उन से डरा और दिल में उन से ख़ौफ़ महसूस किया, वह बोले डरो मत, बेशक हम क़ौमे लूत (अ) की तरफ़ भेजे गए हैं। (70)

और उस की बीवी खड़ी हुई थी तो वह हँस पड़ी सो हम ने उसे ख़ुशख़बरी दी इसहाक़ (अ), और इसहाक़ (अ) के बाद याक़ूब (अ) की। (71)

वह बोली अए है! क्या मेरे बच्चा होगा? हालांकि मैं बुढ़या हूँ और यह मेरा ख़ावन्द बूढ़ा है, बेशक यह एक अ़जीब बात है। (72)

قَالُوْٓا اَتَعْجَبِيْنَ مِنْ اَمْرِ اللّٰهِ رَحْمَتُ اللّٰهِ وَبَرَكٰتُهٗ عَلَيْكُمْ

तुम पर	और उस की बरकतें	अल्लाह की रहमत	अल्लाह का हुक्म	से	क्या तू तअ़ज्जुब करती है	वह बोले

اَهْلَ الْبَيْتِ ۭ اِنَّهٗ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ ﴿٧٣﴾ فَلَمَّا ذَهَبَ عَنْ اِبْرٰهِيْمَ الرَّوْعُ

ख़ौफ़	इब्राहीम (अ)	से (का)	जाता रहा	फिर जब	73	बुज़ुर्गी वाला	ख़ूबियों वाला	बेशक वह	ऐ घर वालो

وَجَاۗءَتْهُ الْبُشْرٰى يُجَادِلُنَا فِيْ قَوْمِ لُوْطٍ ﴿٧٤﴾ اِنَّ اِبْرٰهِيْمَ

इब्राहीम (अ)	बेशक	74	क़ौमे लूत	में	हम से झगड़ने लगा	ख़ुशख़बरी	और उस के पास आगई

لَحَلِيْمٌ اَوَّاهٌ مُّنِيْبٌ ﴿٧٥﴾ يٰٓاِبْرٰهِيْمُ اَعْرِضْ عَنْ هٰذَا ۚ اِنَّهٗ قَدْ جَاۗءَ

आचुका	बेशक यह	इस से	ऐराज़ कर	ऐ इब्राहीम (अ)	75	रुजूअ़ करने वाला	नर्म दिल	बुर्दबार

اَمْرُ رَبِّكَ ۚ وَاِنَّهُمْ اٰتِيْهِمْ عَذَابٌ غَيْرُ مَرْدُوْدٍ ﴿٧٦﴾ وَلَمَّا

और जब	76	न टलाया जाने वाला	अ़ज़ाब	उन पर आगया	और बेशक उन	तेरे रब का हुक्म

جَاۗءَتْ رُسُلُنَا لُوْطًا سِيْۗءَ بِهِمْ وَضَاقَ بِهِمْ ذَرْعًا وَّقَالَ هٰذَا

यह	और बोला	दिल में	उन से	और तंग हुआ	उन से	वह ग़मगीन हुआ	लूत (अ) के पास	हमारे फ़रिश्ते	आए

يَوْمٌ عَصِيْبٌ ﴿٧٧﴾ وَجَاۗءَهٗ قَوْمُهٗ يُهْرَعُوْنَ اِلَيْهِ ۭ وَمِنْ قَبْلُ كَانُوْا

और उस से क़ब्ल	उस की तरफ़	दौड़ती हुई	उस की क़ौम	और उस के पास आई	77	बड़ा सख़्ती का दिन

يَعْمَلُوْنَ السَّيِّاٰتِ ۭ قَالَ يٰقَوْمِ هٰٓؤُلَاۗءِ بَنَاتِيْ هُنَّ اَطْهَرُ

निहायत पाकीज़ा	यह	मेरी बेटियां	यह	ऐ मेरी क़ौम	उस ने कहा	बुरे काम	वह करते थे

لَكُمْ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَلَا تُخْزُوْنِ فِيْ ضَيْفِيْ ۭ اَلَيْسَ مِنْكُمْ رَجُلٌ

एक आदमी	तुम से (तुम में)	क्या नहीं	मेरे मेहमानों में	और न रुसवा करो मुझे	अल्लाह	पस डरो	तुम्हारे लिए

رَّشِيْدٌ ﴿٧٨﴾ قَالُوْا لَقَدْ عَلِمْتَ مَا لَنَا فِيْ بَنٰتِكَ مِنْ حَقٍّ ۚ

हक़	कोई	तेरी बेटियों में	हमारे लिए	नहीं	तू तो जानता है	वह बोले	78	नेक चलन

وَاِنَّكَ لَتَعْلَمُ مَا نُرِيْدُ ﴿٧٩﴾ قَالَ لَوْ اَنَّ لِيْ بِكُمْ قُوَّةً

कोई ज़ोर	तुम पर	मेरे लिए (मेरा)	काश कि	उस ने कहा	79	चाहते हैं?	हम क्या	ख़ूब जानता है	और बेशक तू

اَوْ اٰوِيْٓ اِلٰى رُكْنٍ شَدِيْدٍ ﴿٨٠﴾ قَالُوْا يٰلُوْطُ اِنَّا رُسُلُ رَبِّكَ

तुम्हारा रब	भेजे हुए	बेशक हम	ऐ लूत (अ)	वह बोले	80	मज़बूत पाया	तरफ़	या मैं पनाह लेता

لَنْ يَّصِلُوْٓا اِلَيْكَ فَاَسْرِ بِاَهْلِكَ بِقِطْعٍ مِّنَ الَّيْلِ وَلَا يَلْتَفِتْ

और न मुड़ कर देखे	रात	से (का)	कोई हिस्सा	अपने घर वालों के साथ	सो ले निकल	तुम तक	वह हरगिज़ नहीं पहुँचेंगे

مِنْكُمْ اَحَدٌ اِلَّا امْرَاَتَكَ ۭ اِنَّهٗ مُصِيْبُهَا مَآ اَصَابَهُمْ ۭ

उन को पहुँचेगा	जो	उस को पहुँचने वाला	बेशक वह	तुम्हारी बीवी	सिवा	कोई	तुम में से

اِنَّ مَوْعِدَهُمُ الصُّبْحُ ۭ اَلَيْسَ الصُّبْحُ بِقَرِيْبٍ ﴿٨١﴾

81	नज़्दीक	सुब्ह	क्या नहीं	सुब्ह	उन का वादा	बेशक

वह बोले क्या तू अल्लाह के हुक्म से (अल्लाह की क़ुदरत पर) तअ़ज्जुब करती है? तुम पर अल्लाह की रहमत और उस की बरकतें ऐ घर वालो! बेशक वह ख़ूबियों वाला, बुज़ुर्गी वाला है। (73)
फिर जब इब्राहीम (अ) का ख़ौफ़ जाता रहा, और उस के पास ख़ुशख़बरी आगई, वह हम से क़ौमे लूत (अ) (के बारे) में झगड़ने लगा। (74)
बेशक इब्राहीम (अ) बुर्दबार, नर्म दिल रुजूअ़ करने वाला। (75)
ऐ इब्राहीम (अ)! उस से एराज़ कर (यह ख़याल छोड़ दे) बेशक तेरे रब का हुक्म आचुका, और बेशक उन पर न टलाया जाने वाला अ़ज़ाब आने वाला है (आया ही चाहता है)। (76)
और जब हमारे फ़रिश्ते लूत (अ) के पास आए वह उस से ग़मगीन हुआ और तंग दिल हुआ उन (की तरफ़) से और बोला यह बड़ा सख़्ती का दिन है। (77)
और उस के पास उस की क़ौम दौड़ती हुई आई, ओर वह उस से क़ब्ल बुरे काम करते थे, उस ने कहा ऐ मेरी क़ौम! यह मेरी बेटियां (मौजूद) हैं, यह तुम्हारे लिए निहायत पाकीज़ा हैं, पस अल्लाह से डरो और मुझे मेरे मेहमानों में रुसवा न करो, क्या तुम में एक आदमी (भी) नेक चलन नहीं? (78)
वह बोले तू तो जानता है, तेरी बेटियों में हमारे लिए कोई हक़ (ग़र्ज़) नहीं, और बेशक तू ख़ूब जानता है हम किया चाहते हैं? (79)
उस ने कहा काश मेरा तुम पर कोई ज़ोर होता, या मैं किसी मज़बूत पाए की पनाह लेता। (80)
वह (फ़रिश्ते) बोले, ऐ लूत (अ)! बेशक हम तुम्हारे रब के भेजे हुए हैं वह तुम तक हरगिज़ न पहुँच सकेंगे, सो तुम अपने घर वालों के साथ रात के किसी हिस्से में (रातों रात) निकलो, और मुड़ कर न देखे तुम में से तुम्हारी बीवी के सिवा कोई, बेशक जो उन को पहुँचेगा उस को पहुँचने वाला है (पहुँच कर रहेगा), बेशक उन पर (अ़ज़ाब के) वादे का वक़्त सुब्ह है, क्या सुब्ह नज़्दीक नहीं? (81)

فَلَمَّا جَآءَ اَمْرُنَا جَعَلْنَا عَالِيَهَا سَافِلَهَا وَاَمْطَرْنَا عَلَيْهَا

उस पर	और हम ने बरसाए	उस का नीचा (पस्त)	उस का ऊपर (बुलन्द)	हम ने करदिया	हमारा हुक्म	आया	पस जब

حِجَارَةً مِّنْ سِجِّيْلٍ ۙ مَّنْضُوْدٍ ﴿٨٢﴾ مُّسَوَّمَةً عِنْدَ رَبِّكَ

तेरे रब के पास	निशान किए हुए	82	तह ब तह	कंकर (संगरेज़े)	पत्थर

وَمَا هِيَ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ بِبَعِيْدٍ ﴿٨٣﴾ وَاِلٰى مَدْيَنَ اَخَاهُمْ شُعَيْبًا
ع ۱۵ / ۷ النّصف

शुऐब (अ)	उन का भाई	और मदयन की तरफ़	83	कुछ दूर	ज़ालिम (जमा)	से	यह	और नहीं

قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ

उस के सिवा	कोई माबूद	तुम्हारे लिए नहीं	अल्लाह	इबादत करो	ऐ मेरी क़ौम	उस ने कहा

وَلَا تَنْقُصُوا الْمِكْيَالَ وَالْمِيْزَانَ اِنِّيْٓ اَرٰىكُمْ بِخَيْرٍ وَّاِنِّيْٓ

और बेशक मैं	आसूदा हाल	तुम्हें देखता हूँ	बेशक मैं	और तोल	माप	और न कमी करो

اَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ مُّحِيْطٍ ﴿٨٤﴾ وَيٰقَوْمِ اَوْفُوا

पूरा करो	और ऐ मेरी क़ौम	84	एक घेरलेने वाला दिन	अ़ज़ाब	तुम पर	डरता हूँ

الْمِكْيَالَ وَالْمِيْزَانَ بِالْقِسْطِ وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ اَشْيَآءَهُمْ

उन की चीज़	लोग	और न घटाओ	इन्साफ़ से	और तोल	माप

وَلَا تَعْثَوْا فِي الْاَرْضِ مُفْسِدِيْنَ ﴿٨٥﴾ بَقِيَّتُ اللّٰهِ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ

अगर	तुम्हारे लिए	बेहतर	अल्लाह	बचा हुआ	85	फ़साद करते हुए	ज़मीन में	और न फिरो

كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۚ وَمَآ اَنَا عَلَيْكُمْ بِحَفِيْظٍ ﴿٨٦﴾ قَالُوْا يٰشُعَيْبُ

ऐ शुऐब (अ)	वह बोले	86	निगहबान	तुम पर	मैं	और नहीं	ईमान वाले	तुम हो

اَصَلٰوتُكَ تَاْمُرُكَ اَنْ نَّتْرُكَ مَا يَعْبُدُ اٰبَآؤُنَآ اَوْ اَنْ نَّفْعَلَ

हम न करें	या	हमारे बाप दादा	जो परस्तिश करते थे	हम छोड़ दें	कि	तुझे हुक्म देती है	क्या तेरी नमाज़

فِيْٓ اَمْوَالِنَا مَا نَشٰٓؤُا ۭ اِنَّكَ لَاَنْتَ الْحَلِيْمُ الرَّشِيْدُ ﴿٨٧﴾ قَالَ

उस ने कहा	87	नेक चलन	बुर्दबार (बाविक़ार)	अलबत्ता तू	बेशक तू	जो हम चाहें	अपने मालों में

يٰقَوْمِ اَرَءَيْتُمْ اِنْ كُنْتُ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّيْ وَرَزَقَنِيْ مِنْهُ

अपनी तरफ़ से	उस ने मुझे रोज़ी दी	अपना रब	से	रौशन दलील	पर	मैं हूँ	अगर	क्या तुम देखते हो (क्या ख़याल है)	ऐ मेरी क़ौम

رِزْقًا حَسَنًا ۭ وَمَآ اُرِيْدُ اَنْ اُخَالِفَكُمْ اِلٰى مَآ اَنْهٰىكُمْ

जिस से मैं तुम्हें रोकता हूँ	तरफ़	मैं उस के ख़िलाफ़ करूँ	कि	और मैं नहीं चाहता	अच्छी	रोज़ी

عَنْهُ ۭ اِنْ اُرِيْدُ اِلَّا الْاِصْلَاحَ مَا اسْتَطَعْتُ ۭ وَمَا

और नहीं	मुझ से हो सके	जो (जिस क़द्र)	इस्लाह	मगर (सिर्फ़)	मैं चाहता	नहीं	उस से

تَوْفِيْقِيْٓ اِلَّا بِاللّٰهِ ۭ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَاِلَيْهِ اُنِيْبُ ﴿٨٨﴾

88	मैं रुजूअ़ करता हूँ	और उसी की तरफ़	मैं ने भरोसा किया	उस पर	अल्लाह से	मगर (सिर्फ़)	मेरी तौफ़ीक़

पस जब हमारा हुक्म आया, हम ने उन का बुलन्द पस्त कर दिया (ज़ेर ज़बर कर दिया) और हम ने बरसाए उस (बस्ती) पर संगरेज़े के पत्थर तह ब तह (लगातार)। **(82)**

तेरे रब के पास निशान किए हुए, और यह नहीं है ज़ालिमों से कुछ दूर। **(83)**

और मदयन की तरफ़ उन के भाई शुऐब (अ) (आए), उस ने कहा: ऐ मेरी क़ौम! अल्लाह की इबादत करो, अल्लाह के सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं, और माप तोल में कमी न करो, बेशक मैं तुम्हें आसूदा हाल देखता हूँ, और बेशक मैं तुम पर एक घेर लेने वाले दिन के अ़ज़ाब से डरता हूँ। **(84)**

और ऐ मेरी क़ौम! इन्साफ़ से माप तोल पूरा करो, लोगों को उन की चीज़ें घटा कर न दो, और ज़मीन में फ़साद करते न फिरो। **(85)**

अल्लाह (का दिया हुआ जो) बच रहे तुम्हारे लिए बेहतर है, अगर तुम ईमान वाले हो, और मैं तुम पर निगहबान नहीं हूँ। **(86)**

वह बोले ऐ शुऐब (अ)! क्या तेरी नमाज़ तुझे हुक्म देती है (सिखाती है)? कि उन्हें छोड़ दें जिन की हमारे बाप दादा परस्तिश करते थे, या अपने मालों में हम जो चाहें न करें, (ताने भरे अंदाज़ में बोले) बेशक तुम ही बाविक़ार, नेक चलन हो? **(87)**

उस ने कहा ऐ मेरी क़ौम! तुम्हारा क्या ख़याल है? मैं अपने रब की तरफ़ से अगर रौशन दलील पर हूँ और उस ने मुझे अपनी तरफ़ से अच्छी रोज़ी दी है, और मैं नहीं चाहता कि मैं (ख़ुद) उस के ख़िलाफ़ करूँ जिस से तुम्हें रोकता हूँ, जिस क़द्र मुझ से हो सके मैं सिर्फ़ इस्लाह चाहता हूँ और मेरी तौफ़ीक़ सिर्फ़ अल्लाह ही से है, उसी पर मैं ने भरोसा किया और उसी की तरफ़ रुजूअ़ करता हूँ। **(88)**

وَيٰقَوْمِ لَا يَجْرِمَنَّكُمْ شِقَاقِيْٓ اَنْ يُّصِيْبَكُمْ مِّثْلُ مَآ اَصَابَ

जो पहुँचा	उस जैसा	कि तुम्हें पहुँचे	मेरी ज़िद	तुम्हें आमादा न करदे	और ऐ मेरी क़ौम

قَوْمَ نُوْحٍ اَوْ قَوْمَ هُوْدٍ اَوْ قَوْمَ صٰلِحٍ ؕ وَمَا قَوْمُ لُوْطٍ مِّنْكُمْ

तुम से	क़ौमे लूत	और नहीं	क़ौमे सालेह	या	क़ौमे हूद	या	क़ौमे नूह (अ)

بِبَعِيْدٍ ﴿۸۹﴾ وَاسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوْبُوْٓا اِلَيْهِ ؕ اِنَّ رَبِّيْ رَحِيْمٌ

निहायत मेहरबान	मेरा रब	बेशक	उस की तरफ़ रुजूअ करो	फिर	अपना रब	और बख़्शिश मांगो	89	कुछ दूर

وَّدُوْدٌ ﴿۹۰﴾ قَالُوْا يٰشُعَيْبُ مَا نَفْقَهُ كَثِيْرًا مِّمَّا تَقُوْلُ وَاِنَّا

और बेशक हम	उन से जो तू कहता है	बहुत	हम नहीं समझते	ऐ शुऐब (अ)	उन्हों ने कहा	90	मुहब्बत वाला

لَنَرٰىكَ فِيْنَا ضَعِيْفًا ۚ وَلَوْ لَا رَهْطُكَ لَرَجَمْنٰكَ ۫ وَمَآ اَنْتَ عَلَيْنَا

हम पर	तू	और नहीं	तुझ पर पथराओ करते	और अगर तेरा कुम्बा न होता	ज़ईफ़ (कमज़ोर)	अपने दरमियान	तुझे देखते हैं

بِعَزِيْزٍ ﴿۹۱﴾ قَالَ يٰقَوْمِ اَرَهْطِيْٓ اَعَزُّ عَلَيْكُمْ مِّنَ اللّٰهِ ؕ

अल्लाह	से	तुम पर	ज़ियादा ज़ोर वाला	क्या मेरा कुम्बा	ऐ मेरी क़ौम	उस ने कहा	91	ग़ालिब

وَاتَّخَذْتُمُوْهُ وَرَآءَكُمْ ظِهْرِيًّا ؕ اِنَّ رَبِّيْ بِمَا تَعْمَلُوْنَ مُحِيْطٌ ﴿۹۲﴾

92	अहाता किए हुए	उसे जो तुम करते हो	मेरा रब	बेशक	पीठ पीछे	अपने से परे	और तुम ने उसे लिया (डाल रखा)

وَيٰقَوْمِ اعْمَلُوْا عَلٰى مَكَانَتِكُمْ اِنِّيْ عَامِلٌ ؕ سَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۙ

तुम जान लोगे	जल्द	काम करता हूँ	बेशक मैं	अपनी जगह	पर	तुम काम करते रहो	ऐ मेरी क़ौम

مَنْ يَّاْتِيْهِ عَذَابٌ يُّخْزِيْهِ وَمَنْ هُوَ كَاذِبٌ ؕ وَارْتَقِبُوْٓا

और तुम इन्तिज़ार करो	झूटा	वह	और कौन?	उस को रुस्वा कर देगा	अज़ाब	उस पर आता है	कौन - किस?

اِنِّيْ مَعَكُمْ رَقِيْبٌ ﴿۹۳﴾ وَلَمَّا جَآءَ اَمْرُنَا نَجَّيْنَا شُعَيْبًا

शुऐब (अ)	हम ने बचा लिया	हमारा हुक्म	और जब आया	93	इन्तिज़ार	तुम्हारे साथ	मैं बेशक

وَّالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا ۚ وَاَخَذَتِ الَّذِيْنَ ظَلَمُوا الصَّيْحَةُ

कड़क (चिंघाड़)	उन्हों ने ज़ुल्म किया	वह लोग जो	और आलिया	अपनी से	अपनी रहमत से	उस के साथ	और जो लोग ईमान लाए

فَاَصْبَحُوْا فِيْ دِيَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ ﴿۹۴﴾ كَاَنْ لَّمْ يَغْنَوْا فِيْهَا ؕ اَلَا

याद रखो	उस में (वाहां)	वह नहीं बसे	गोया	94	औन्धे पड़े हुए	अपने घरों में	सो सुबह की उन्हों ने

ع ١٢ ٨ بُعْدًا لِّمَدْيَنَ كَمَا بَعِدَتْ ثَمُوْدُ ﴿۹۵﴾ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى

मूसा (अ)	और हम ने भेजा	95	समूद	जैसे दूर हुए	मदयन के लिए	दूरी है

بِاٰيٰتِنَا وَسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ﴿۹۶﴾ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ىِٕهٖ

और उस के सरदार	फ़िरऔन कि तरफ़	96	रौशन	और दलील	अपनी निशानियों के साथ

فَاتَّبَعُوْٓا اَمْرَ فِرْعَوْنَ ۚ وَمَآ اَمْرُ فِرْعَوْنَ بِرَشِيْدٍ ﴿۹۷﴾

97	दुरुस्त	फ़िरऔन का हुक्म	और न	फ़िरऔन का हुक्म	तो उन्हों ने पैरवी की

और ऐ मेरी क़ौम! तुम्हें मेरी ज़िद आमादा न कर दे कि तुम्हें (अज़ाब) पहुँचे उस जैसा जो क़ौमे नूह (अ) या क़ौमे हूद (अ) या क़ौमे सालेह (अ) को, और क़ौमे लूत (अ) नहीं है तुम से कुछ दूर। **(89)**

और अपने रब से बख़्शिश मांगो, फिर उस की तरफ़ रुजूअ करो, बेशक मेरा रब निहायत मेहरबान, मुहब्बत वाला है। **(90)**

उन्हों ने कहा ऐ शुऐब (अ)! तू जो कहता है उन में से हम बहुत (सी बातें) नहीं समझते और बेशक हम तुझे देखते हैं अपने दरमियान कमज़ोर, और तेरा कुम्बा (भाई बन्द) न होते तो हम तुझ पर पथराओ करते और तू हम पर ग़ालिब नहीं। **(91)**

उस ने कहा ऐ मेरी क़ौम! क्या मेरा कुम्बा तुम पर अल्लाह से ज़ियादा ज़ोर वाला है? और तुम ने उसे अपनी पीठ पीछे डाल रखा है, बेशक मेरा रब जो तुम करते हो उसे अहाता (क़ाबू) किए हुए है। **(92)**

और ऐ मेरी क़ौम! तुम अपनी जगह काम करते रहो मैं (अपना) काम करता हूँ, तुम जल्द जान लोगे किस पर वह अज़ाब आता है जो उस को रुस्वा कर देगा? और कौन झूटा है? और तुम इन्तिज़ार करो, बेशक मैं (भी) तुम्हारे साथ इन्तिज़ार में हूँ। **(93)**

और जब हमारा हुक्म आया, हम ने शुऐब (अ) को और जो लोग उस के साथ ईमान लाए अपनी रहमत से बचा लिया, और जिन लोगों ने ज़ुल्म किया उन्हें चिंघाड़ ने आलिया, सो उन्हों ने सुबह की (सुबह के वक़्त) अपने घरों में औन्धे पड़े रह गए। **(94)**

गोया वह वहां बसे (ही) न थे, याद रखो! (रहमत से) दूरी हो मदयन के लिए जैसे दूर हुए समूद। **(95)**

और हम ने भेजा मूसा (अ) को अपनी निशानियों और रौशन दलील के साथ, **(96)**

फ़िरऔन और उसके सरदारों की तरफ़, तो उन्हों ने फ़िरऔन के हुक्म की पैरवी की और फ़िरऔन का हुक्म दुरुस्त न था। **(97)**

يَقۡدُمُ قَوۡمَهٗ يَوۡمَ الۡقِيٰمَةِ فَاَوۡرَدَهُمُ النَّارَ ؕ وَبِئۡسَ

और बुरा	दोज़ख़	तो ला उतारेगा उन्हें	क़ियामत के दिन	अपनी क़ौम	आगे होगा

الۡوِرۡدُ الۡمَوۡرُوۡدُ ﴿۹۸﴾ وَاُتۡبِعُوۡا فِیۡ هٰذِهٖ لَعۡنَةً وَّيَوۡمَ الۡقِيٰمَةِ ؕ بِئۡسَ

बुरा	और क़ियामत के दिन	लानत	इस में	और उन के पीछे लगादी गई	98	घाट (उतरने का मुक़ाम)

الرِّفۡدُ الۡمَرۡفُوۡدُ ﴿۹۹﴾ ذٰلِكَ مِنۡ اَنۡۢبَآءِ الۡقُرٰى نَقُصُّهٗ عَلَيۡكَ مِنۡهَا

उन से	तुझ पर (को)	हम यह बयान करते हैं	बस्तियों की ख़बरें	से	यह	99	उन्हें इनआम दिया गया	इनआम

قَآئِمٌ وَّحَصِيۡدٌ ﴿۱۰۰﴾ وَمَا ظَلَمۡنٰهُمۡ وَلٰـكِنۡ ظَلَمُوۡۤا اَنۡفُسَهُمۡ

अपनी जानों पर	उन्हों ने ज़ुल्म किया	और लेकिन (बल्कि)	और हम ने ज़ुल्म नहीं किया उन पर	100	और कट चुकीं	क़ाइम (मौजूद)

فَمَاۤ اَغۡنَتۡ عَنۡهُمۡ اٰلِهَتُهُمُ الَّتِىۡ يَدۡعُوۡنَ مِنۡ دُوۡنِ اللّٰهِ

अल्लाह	अलावा	वह पुकारते थे	वह जो	उन के माबूद	उन से (के)	सो न काम आए

مِنۡ شَىۡءٍ لَّمَّا جَآءَ اَمۡرُ رَبِّكَ ؕ وَمَا زَادُوۡهُمۡ غَيۡرَ تَتۡبِيۡبٍ ﴿۱۰۱﴾

101	सिवाए हलाकत	और न बढ़ाया उन्हें	तेरे रब का हुक्म	आया	जब	कुछ भी

وَكَذٰلِكَ اَخۡذُ رَبِّكَ اِذَاۤ اَخَذَ الۡقُرٰى وَهِىَ ظَالِمَةٌ ؕ اِنَّ اَخۡذَهٗۤ

उस की पकड़	बेशक	ज़ुल्म करते हीं	और वह	बस्तियां	जब उस ने पकड़ा (पकड़ता है)	तेरा रब	पकड़	और ऐसी ही

اَلِيۡمٌ شَدِيۡدٌ ﴿۱۰۲﴾ اِنَّ فِىۡ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّمَنۡ خَافَ عَذَابَ الۡاٰخِرَةِ ؕ

आख़िरत का अज़ाब	उस के लिए है जो डरा	अलबत्ता निशानी	उस में	बेशक	102	दर्दनाक सख़्त

ذٰلِكَ يَوۡمٌ مَّجۡمُوۡعٌ ۙ لَّهُ النَّاسُ وَذٰلِكَ يَوۡمٌ مَّشۡهُوۡدٌ ﴿۱۰۳﴾

103	पेश होने का	एक दिन	और यह	सब लोग	उस में	जमा होंगे	एक दिन	यह

وَمَا نُؤَخِّرُهٗۤ اِلَّا لِاَجَلٍ مَّعۡدُوۡدٍ ﴿۱۰۴﴾ؕ يَوۡمَ يَاۡتِ لَا تَكَلَّمُ نَفۡسٌ اِلَّا

मगर	कोई शख़्स	न बात करेगा	वह आएगा	जिस दिन	104	गिनी हुई (मुक़र्ररा)	एक मुद्दत के लिए	मगर	और हम नहीं हटाते पीछे

بِاِذۡنِهٖ ۚ فَمِنۡهُمۡ شَقِىٌّ وَّسَعِيۡدٌ ﴿۱۰۵﴾ فَاَمَّا الَّذِيۡنَ شَقُوۡا فَفِى النَّارِ

दोज़ख़	सो में	बदबख़्त	जो लोग	पस	105	और कोई ख़ुश बख़्त	कोई बदबख़्त	सो उन में	उस की इजाज़त से

لَهُمۡ فِيۡهَا زَفِيۡرٌ وَّشَهِيۡقٌ ﴿۱۰۶﴾ۙ خٰلِدِيۡنَ فِيۡهَا مَا دَامَتِ السَّمٰوٰتُ

आस्मान (जमा)	जब तक हैं	उस मे	हमेशा रहेंगे	106	और दहाड़ना	चीख़ना	उस में	उन के लिए

وَالۡاَرۡضُ اِلَّا مَا شَآءَ رَبُّكَ ؕ اِنَّ رَبَّكَ فَعَّالٌ لِّمَا يُرِيۡدُ ﴿۱۰۷﴾

107	जो वह चाहे	कर गुज़रने वाला	तेरा रब	बेशक	तेरा रब	जितना चाहे	मगर	और ज़मीन

وَاَمَّا الَّذِيۡنَ سُعِدُوۡا فَفِى الۡجَـنَّةِ خٰلِدِيۡنَ فِيۡهَا مَا دَامَتِ

जब तक हैं	उस में	हमेशा रहेंगे	सो जन्नत में	ख़ुश बख़्त हुए	वह लोग जो	और जो

السَّمٰوٰتُ وَالۡاَرۡضُ اِلَّا مَا شَآءَ رَبُّكَ ؕ عَطَآءً غَيۡرَ مَجۡذُوۡذٍ ﴿۱۰۸﴾

108	ख़तम न हाने वाली	अता - बख़्शिश	तेरा रब	जितना चाहे	मगर	और ज़मीन	आस्मान (जमा)

क़ियामत के दिन वह अपनी क़ौम के आगे होगा, तो वह उन्हें दोज़ख़ में ला उतारेगा और बुरा है घाट (उन के) उतरने का मुक़ाम। (98)

और इस (दुनिया) में उन के पीछे लानत लगादी गई और क़ियामत के दिन, बुरा है (यह) इनआम जो उन्हें दिया गया। (99)

यह बस्तियों की ख़बरें हैं कि हम तुझ को बयान करते हैं, उन में कुछ मौजूद हैं और (कुछ की जड़ें) कट चुकीं हैं। (100)

और हम ने उन पर ज़ुल्म नहीं किया, बल्कि उन्हों ने अपनी जानों पर ज़ुल्म किया, सो उन के कुछ काम न आए वह माबूद जिन्हें वह अल्लाह के सिवा पुकारते थे, जब तेरे रब का हुक्म आया, और उन्हें हलाकत के सिवा उन्हों ने कुछ न बढ़ाया। (101)

और ऐसी ही है तेरे रब की पकड़ जब वह बस्तियों को पकड़ता है और वह ज़ुल्म करते हों, बेशक उस की पकड़ दर्दनाक, सख़्त है। (102)

बेशक इस में अलबत्ता उस के लिए निशानी है जो डरा आख़िरत के अज़ाब से, यह एक दिन है जिस में सब लोग जमा होंगे, और यह एक दिन है पेश होने (हाज़री) का। (103)

और हम पीछे नहीं हटाते (मुलतवी नहीं करते) मगर (सिर्फ़) एक मुक़र्ररा मुद्दत तक के लिए। (104)

जब वह दिन आएगा कोई शख़्स बात न कर सकेगा, मगर उस की इजाज़त से, सो कोई उन में बदबख़्त है और कोई ख़ुश बख़्त। (105)

पस जो बदबख़्त हुए वह दोज़ख़ में हैं, उन के लिए उस में चीख़ना और दहाड़ना है। (106)

वह उस में हमेशा रहेंगे, जब तक ज़मीन और आस्मान हैं, मगर जितना तेरा रब चाहे, बेशक तेरा रब जो चाहे कर गुज़रने वाला है। (107)

और जो लोग ख़ुश बख़्त हुए सो वह हमेशा जन्नत में रहेंगे, जब तक ज़मीन और आस्मान हैं, मगर जितना तेरा रब चाहे, (यह) बख़्शिश है ख़तम न हाने वाली। (108)

فَلَا تَكُ فِيْ مِرْيَةٍ مِّمَّا يَعْبُدُ هٰٓؤُلَآءِ ۭ مَا يَعْبُدُوْنَ اِلَّا كَمَا

जैसे	मगर	वह नहीं पूजते	यह लोग	पूजते हैं	उस से जो	शक ओ शुबह में	पस तू न रह

يَعْبُدُ اٰبَاۗؤُهُمْ مِّنْ قَبْلُ ۭ وَاِنَّا لَمُوَفُّوْهُمْ نَصِيْبَهُمْ

उन का हिस्सा	उन्हें पूरा फेर देंगे	और बेशक हम	उस से क़ब्ल	उन के बाप दादा	पूजते थे

ع ١٤ ٩ ٩
غَيْرَ مَنْقُوْصٍ ١٠٩ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ فَاخْتُلِفَ فِيْهِ ۭ

उस में	सो इख़तिलाफ़ किया गया	किताब	मूसा (अ)	और अलबत्ता हम ने दी	109	घटाए बग़ैर

وَلَوْ لَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ ۭ وَاِنَّهُمْ لَفِيْ شَكٍّ

अलबत्ता शक में	और बेशक वह	उन के दरमियान	अलबत्ता फ़ैसला कर दिया जाता	तेरा रब	से	पहले हो चुकी	एक बात	और अगर न

مِّنْهُ مُرِيْبٍ ١١٠ وَاِنَّ كُلًّا لَّمَّا لَيُوَفِّيَنَّهُمْ رَبُّكَ اَعْمَالَهُمْ ۭ

उन के अमल	तेरा रब	उन्हें पूरा बदला देगा	जब	सब	और बेशक	110	धोके में डालने वाला	उस से

اِنَّهٗ بِمَا يَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ١١١ فَاسْتَقِمْ كَمَآ اُمِرْتَ وَمَنْ تَابَ

तौबा की	और जो	तुम्हें हुक्म दिया गया	जैसे	सो तुम क़ाइम रहो	111	बाख़बर	जो वह करते हैं	बेशक वह

مَعَكَ وَلَا تَطْغَوْا ۭ اِنَّهٗ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ١١٢ وَلَا تَرْكَنُوْٓا اِلَى

तरफ़	और न झुको	112	देखने वाला	तुम करते हो	उस से जो	बेशक वह	और सरकशी न करो	तुम्हारे साथ

الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا فَتَمَسَّكُمُ النَّارُ ۙ وَمَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ

कोई	अल्लाह	सिवा	तुम्हारे लिए	और नहीं	आग	पस तुम्हें छुएगी	ज़ुल्म किया उन्हों ने	वह जिन्हों ने

اَوْلِيَاۗءَ ثُمَّ لَا تُنْصَرُوْنَ ١١٣ وَاَقِمِ الصَّلٰوةَ طَرَفَيِ النَّهَارِ وَزُلَفًا

कुछ हिस्सा	दिन	दोनों तरफ़	नमाज़	और क़ाइम रखो	113	न मदद दिए जाओगे	फिर	मददगार - हिमायती

مِّنَ الَّيْلِ ۭ اِنَّ الْحَسَنٰتِ يُذْهِبْنَ السَّـيِّاٰتِ ۭ ذٰلِكَ ذِكْرٰى

नसीहत	यह	बुराइयां	मिटा देती हैं	नेकियां	बेशक	रात	से (के)

لِلذّٰكِرِيْنَ ١١٤ وَاصْبِرْ فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيْعُ اَجْرَ الْمُحْسِنِيْنَ ١١٥

115	नेकी करने वाले	अजर	ज़ाया नहीं करता	अल्लाह	बेशक	और सब्र करो	114	नसीहत मानने वालों के लिए

فَلَوْلَا كَانَ مِنَ الْقُرُوْنِ مِنْ قَبْلِكُمْ اُولُوْا بَقِيَّةٍ يَّنْهَوْنَ عَنِ

से	रोकते	साहबे ख़ैर	तुम से पहले	से	क़ौमें	से	पस क्यों न हुए

الْفَسَادِ فِي الْاَرْضِ اِلَّا قَلِيْلًا مِّمَّنْ اَنْجَيْنَا مِنْهُمْ ۚ وَاتَّبَعَ

और पीछे रहे	उन से	हम ने बचा लिया	से - जो	थोड़े	मगर	ज़मीन में	फ़साद

الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مَآ اُتْرِفُوْا فِيْهِ وَكَانُوْا مُجْرِمِيْنَ ١١٦

116	गुनाहगार	और वह थे	उस में	जो उन्हें दी गई	उन्हों ने ज़ुल्म किया (ज़ालिम)	वह लोग जो

وَمَا كَانَ رَبُّكَ لِيُهْلِكَ الْقُرٰى بِظُلْمٍ وَّاَهْلُهَا مُصْلِحُوْنَ ١١٧

117	नेकोकार	जब कि वहां के लोग	ज़ुल्म से	बस्तियां	कि हलाक कर दे	तेरा रब	और नहीं है

पस उस से शक ओ शुबह में न रहो जो यह (काफ़िर) पूजते हैं, वह नहीं पूजते मगर जैसे उस से क़ब्ल उन के बाप दादा पूजते थे, और बेशक हम उन्हें उन का हिस्सा घटाए बग़ैर पूरा फेर देंगे। (109)
और हम ने अलबत्ता मूसा (अ) को किताब दी, सो उस में इख़तिलाफ़ किया गया, और अगर तेरे रब की तरफ़ से एक बात पहले न हो चुकी होती तो अलबत्ता उन के दरमियान फ़ैसला कर दिया जाता, और अलबत्ता वह इस (क़ुरआन की तरफ़) से धोके में डालने वाले शक में हैं। (110)
और बेशक जब (वक़्त आएगा) सब को पूरा पूरा बदला देगा तेरा रब उन के आमाल का, बेशक जो वह करते हैं वह उस से बाख़बर है। (111)
सो तुम क़ाइम रहो जैसे तुम्हें हुक्म दिया गया है, और वह भी जिस ने तौबा की तुम्हारे साथ, और सरकशी न करो, बेशक जो तुम करते हो वह उस को देख रहा है। (112)
और उन की तरफ़ न झुको जिन्हों ने ज़ुल्म किया, पस तुम्हें आग छुएगी (आ लगेगी), और तुम्हारे लिए अल्लाह के सिवा कोई मददगार नहीं, फिर मदद न दिए जाओगे (मदद न पाओगे)। (113)
और नमाज़ क़ाइम रखो दिन के दोनों तरफ़ (सुबह ओ शाम) और रात के कुछ हिस्से में, बेशक नेकियां मिटा देती हैं बुराइयों को, यह नसीहत है नसीहत मानने वालों के लिए। (114)
और सब्र करो, बेशक अल्लाह अजर ज़ाया नहीं करता नेकी करने वालों का। (115)
पस तुम से पहले जो क़ौमें हुईं उन में साहबाने ख़ैर क्यों न हुए? कि रोकते ज़मीन में फ़साद से, मगर थोड़े से जिन्हें हम ने उन से बचा लिया और ज़ालिम (उन्हीं लज़्ज़तों के) पीछे पड़े रहे जो उन्हें दी गई थीं, और वह गुनाहगार थे। (116)
और तेरा रब ऐसा नहीं है कि बस्तियों को ज़ुल्म से हलाक कर दे जबकि वहां के लोग नेकोकार हों। (117)

وَلَوْ شَآءَ رَبُّكَ لَجَعَلَ النَّاسَ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّلَا يَزَالُوْنَ

और वह हमेशा रहेंगे	एक	उम्मत	लोग (जमा)	तो कर देता	तेरा रब	चाहता	और अगर

مُخْتَلِفِيْنَ ﴿١١٨﴾ اِلَّا مَنْ رَّحِمَ رَبُّكَ ۭ وَلِذٰلِكَ خَلَقَهُمْ ۭ وَتَمَّتْ كَلِمَةُ

बात	और पूरी हुई	पैदा किया उन्हें	और उसी लिए	तेरा रब	रहम किया	जो - जिस	मगर	118	इख़्तिलाफ़ करते हुए

رَبِّكَ لَاَمْلَئَنَّ جَهَنَّمَ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ ﴿١١٩﴾ وَكُلًّا

और हर बात	119	इकट्ठे	और इन्सान	जिन (जमा)	से	जहन्नम	अलबत्ता भर दूँगा	तेरा रब

نَقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الرُّسُلِ مَا نُثَبِّتُ بِهٖ فُؤَادَكَ ۚ وَجَآءَكَ

और तेरे पास आया	तेरा दिल	उस से	कि हम साबित करें (तसल्ली दें)	रसूल (जमा)	ख़बरें (अहवाल)	से	तुझ पर	हम बयान करते हैं

فِيْ هٰذِهِ الْحَقُّ وَمَوْعِظَةٌ وَّذِكْرٰى لِلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٢٠﴾ وَقُلْ لِّلَّذِيْنَ

वह लोग जो	और कह दें	120	मोमिनों के लिए	और याद दिहानी	और नसीहत	हक़	इस	में

لَا يُؤْمِنُوْنَ اعْمَلُوْا عَلٰى مَكَانَتِكُمْ ۭ اِنَّا عٰمِلُوْنَ ﴿١٢١﴾ وَانْتَظِرُوْا ۚ اِنَّا

हम भी	और तुम इन्तिज़ार करो	121	काम करते हैं	हम	अपनी जगह	पर	तुम काम किए जाओ	ईमान नहीं लाते

مُنْتَظِرُوْنَ ﴿١٢٢﴾ وَلِلّٰهِ غَيْبُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاِلَيْهِ يُرْجَعُ الْاَمْرُ

काम	बाज़गश्त	और उसी की तरफ़	और ज़मीन	आस्मानों	ग़ैब	और अल्लाह के पास	122	मुन्तज़िर (जमा)

كُلُّهٗ فَاعْبُدْهُ وَتَوَكَّلْ عَلَيْهِ ۭ وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿١٢٣﴾ ع ١٠ ١٤ ١٠

123	तुम करते हो	उस से जो	ग़ाफ़िल (बेख़बर)	तुम्हारा रब	और नहीं	उस पर	और भरोसा करो	सो उस की इबादत करो	तमाम

آيَاتُهَا ١١١ ❀ سُوْرَةُ يُوْسُفَ (١٢) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ١٢

रुकूआत 12	(12) सूरह यूसुफ़ यूसुफ़ (अ)	आयात 111

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

الٓرٰ ۣ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ﴿١﴾ اِنَّآ اَنْزَلْنٰهُ قُرْءٰنًا عَرَبِيًّا

अरबी	कुरआन	उसे नाज़िल किया	बेशक हम ने	1	रौशन	किताब	आयतें	यह	अलिफ़ लाम रा

لَّعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿٢﴾ نَحْنُ نَقُصُّ عَلَيْكَ اَحْسَنَ الْقَصَصِ بِمَآ

इस लिए कि	क़िस्सा	बहुत अच्छा	तुम पर	बयान करते हैं	हम	2	समझो	ताकि तुम

اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ هٰذَا الْقُرْاٰنَ ۤ وَاِنْ كُنْتَ مِنْ قَبْلِهٖ لَمِنَ

अलबत्ता-से	इस से क़ब्ल	तू था	और तहक़ीक़	कुरआन	यह	तुम्हारी तरफ़	हम ने भेजा

الْغٰفِلِيْنَ ﴿٣﴾ اِذْ قَالَ يُوْسُفُ لِاَبِيْهِ يٰٓاَبَتِ اِنِّيْ رَاَيْتُ

मैं ने देखा	बेशक मैं	ऐ मेरे बाप	अपने बाप से	यूसुफ़ (अ)	कहा	जब	3	बेख़बर (जमा)

اَحَدَ عَشَرَ كَوْكَبًا وَّالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ رَاَيْتُهُمْ لِيْ سٰجِدِيْنَ ﴿٤﴾

4	सिजदा करते	अपने लिए	मैं ने उन्हें देखा	और चाँद	और सूरज	सितारे	ग्यारह (11)

और अगर तेरा रब चाहता तो लोगों को एक (ही) उम्मत कर देता और वह हमेशा इख़्तिलाफ़ करते रहेंगे। (118) मगर जिस पर तेरे रब ने रहम किया, और उसी लिए उन्हें पैदा किया, और पूरी हुई तेरे रब की बात, अलबत्ता जहन्नम को भर दूँगा जिन्नों और इन्सानों से इकट्ठे। (119) और हर बात हम तुम से रसूलों के अहवाल की बयान करते हैं ताकि उस से तुम्हारे दिल को तसल्ली दें, और तुम्हारे पास आया इस में हक़, और मोमिनों के लिए नसीहत और याद दिहानी। (120) और उन लोंगो को कह दें जो ईमान नहीं लाते, तुम अपनी जगह काम किए जाओ, हम (अपनी जगह) काम करते हैं। (121) और तुम इन्तिज़ार करो, हम भी मुन्तज़िर हैं। (122) और अल्लाह के पास है आस्मानों और ज़मीन के ग़ैब (छुपी हुई बातें), और उस की तरफ़ तमाम कामों की बाज़गश्त है, सो उस की इबादत करो, और उस पर भरोसा करो, और तुम्हारा रब उस से बेख़बर नहीं जो तुम करते हो। (123)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, रहम करने वाला है

अलिफ़-लाम-रा, यह रौशन किताब की आयतें हैं। (1) बेशक हम ने उसे कुरआन अरबी ज़बान में नाज़िल किया, ताकि तुम समझो। (2) हम तुम पर बहुत अच्छा क़िस्सा बयान करते हैं, इस लिए कि हम ने तुम्हारी तरफ़ यह कुरआन भेजा और तहक़ीक़ तुम उस से क़ब्ल अलबत्ता बेख़बरों में से थे। (3) (याद करो) जब यूसुफ़ (अ) ने अपने बाप से कहा, ऐ मेरे बाप! बेशक मैं ने ग्यारह (11) सितारों और सूरज चाँद को (सपने में) देखा, मैं ने उन्हें अपने लिए सिजदा करते देखा। (4)

قَالَ يٰبُنَيَّ لَا تَقْصُصْ رُءْيَاكَ عَلٰۤى اِخْوَتِكَ فَيَكِيْدُوْا لَكَ

तेरे लिए	वह चाल चलेंगे	अपने भाई	पर (से)	अपना ख़्वाब	न बयान करना	ऐ मेरे बेटे	उस ने कहा

كَيْدًا ؕ اِنَّ الشَّيْطٰنَ لِلْاِنْسَانِ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ﴿۵﴾ وَكَذٰلِكَ

और उसी तरह	5	खुला	दुश्मन	इन्सान के लिए (का)	शैतान	बेशक	कोई चाल

يَجْتَبِيْكَ رَبُّكَ وَيُعَلِّمُكَ مِنْ تَاْوِيْلِ الْاَحَادِيْثِ وَيُتِمُّ نِعْمَتَهٗ

अपनी नेमत	और मुकम्मल करेगा	बातों	अन्जाम निकालना	से	और सिखाएगा तुझे	तेरा रब	चुन लेगा तुझे

عَلَيْكَ وَعَلٰۤى اٰلِ يَعْقُوْبَ كَمَاۤ اَتَمَّهَا عَلٰۤى اَبَوَيْكَ مِنْ قَبْلُ

इस से पहले	तेरे बाप दादा	पर	उस ने उसे पूरा किया	जैसे	याक़ूब (अ) के घर वाले	और पर	तुझ पर

ع ٦ ١١ اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْحٰقَ ؕ اِنَّ رَبَّكَ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿۶﴾ لَقَدْ كَانَ فِيْ يُوْسُفَ

यूसुफ़ (अ)	में	बेशक हैं	6	हिक्मत वाला	इल्म वाला	तेरा रब	बेशक	और इसहाक़ (अ)	इब्राहीम (अ)

وَاِخْوَتِهٖۤ اٰيٰتٌ لِّلسَّآئِلِيْنَ ﴿۷﴾ اِذْ قَالُوْا لَيُوْسُفُ وَاَخُوْهُ اَحَبُّ

ज़ियादा प्यारा	और उस का भाई	ज़रूर यूसुफ़ (अ)	उन्हों ने कहा	जब	7	पूछने वालों के लिए	निशानियां	और उस के भाई

اِلٰۤى اَبِيْنَا مِنَّا وَنَحْنُ عُصْبَةٌ ؕ اِنَّ اَبَانَا لَفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنِ ﴿۸﴾

8	सरीह	अलबत्ता ग़लती में	हमारा बाप	बेशक	एक जमाअत	जब कि हम	हम से	हमारा बाप	तरफ़ (को)

اقْتُلُوْا يُوْسُفَ اَوِ اطْرَحُوْهُ اَرْضًا يَّخْلُ لَكُمْ وَجْهُ اَبِيْكُمْ

तुम्हारे बाप	मुँह (तवज्जुह)	तुम्हारे लिए	ख़ाली हो जाए	किसी सर ज़मीन	उसे डाल आओ	या	यूसुफ़ (अ)	मार डालो

وَتَكُوْنُوْا مِنْۢ بَعْدِهٖ قَوْمًا صٰلِحِيْنَ ﴿۹﴾ قَالَ قَآئِلٌ مِّنْهُمْ لَا تَقْتُلُوْا

न क़त्ल करो	उन से	एक कहने वाला	कहा	9	नेक (जमा)	लोग	उस के बाद	से	और तुम हो जाओ

يُوْسُفَ وَاَلْقُوْهُ فِيْ غَيٰبَتِ الْجُبِّ يَلْتَقِطْهُ بَعْضُ السَّيَّارَةِ

चलता (मुसाफ़िर)	कोई	उठाले उस को	कुआं	अन्धा (गहरा)	में	और उसे डाल आओ	यूसुफ़ (अ)

اِنْ كُنْتُمْ فٰعِلِيْنَ ﴿۱۰﴾ قَالُوْا يٰۤاَبَانَا مَا لَكَ لَا تَاْمَنَّا عَلٰى يُوْسُفَ

यूसुफ़ (अ)	पर (बारे में)	तू हमारा भरोसा नहीं करता	क्या हुआ तुझे	ऐ हमारे अब्बा	कहने लगे	10	तुम करने वाले हो (करना ही है)	अगर

وَاِنَّا لَهٗ لَنٰصِحُوْنَ ﴿۱۱﴾ اَرْسِلْهُ مَعَنَا غَدًا يَّرْتَعْ وَيَلْعَبْ وَاِنَّا

और बेशक हम	और खेले कूदे	वह खाए	कल	हमारे साथ	उसे भेज दे	11	अलबत्ता ख़ैर ख़्वाह	उस के	और बेशक हम

لَهٗ لَحٰفِظُوْنَ ﴿۱۲﴾ قَالَ اِنِّيْ لَيَحْزُنُنِيْۤ اَنْ تَذْهَبُوْا بِهٖ وَاَخَافُ

और मैं डरता हूँ	उसे	तुम लेजाओ	कि	ग़मगीन करता है	बेशक मुझे	उस ने कहा	12	अलबत्ता मुहाफ़िज़	उस के

اَنْ يَّاْكُلَهُ الذِّئْبُ وَاَنْتُمْ عَنْهُ غٰفِلُوْنَ ﴿۱۳﴾ قَالُوْا لَئِنْ

अगर	वह बोले	13	बेख़बर (जमा)	उस से	और तुम	भेड़िया	उसे खाजाए	कि

اَكَلَهُ الذِّئْبُ وَنَحْنُ عُصْبَةٌ اِنَّاۤ اِذًا لَّخٰسِرُوْنَ ﴿۱۴﴾

14	ज़ियांकार	उस सूरत में	बेशक हम	एक जमाअत	और हम	भेड़िया	उसे खा जाए

उस ने कहा ऐ मेरे बेटे! अपना सपना अपने भाइयों से बयान न करना कि वह तेरे लिए कोई चाल चलेंगे, बेशक शैतान इन्सान का खुला दुश्मन है। (5)

और तेरा रब उसी तरह तुझे चुन लेगा, और तुझे सिखाएगा बातों का अन्जाम निकालना (ख़्वाबों की ताबीर) और तुझ पर अपनी नेमत पूरी करेगा, और याक़ूब (अ) के घर वालों पर, जैसे उस ने इस से पहले तेरे बाप दादा इब्राहीम (अ) और इसहाक़ (अ) पर उसे पूरा किया, बेशक तेरा रब इल्म वाला, हिक्मत वाला है। (6)

बेशक यूसुफ़ (अ) और उस के भाइयों में पूछने वालों के लिए खुली निशानियां हैं। (7)

जब उन्हों ने कहा ज़रूर यूसुफ़ (अ) और उस का भाई हमारे बाप को हम से ज़्यादा प्यारे हैं, जब कि हम एक जमाअत (क़वी) हैं, बेशक हमारे अब्बा सरीह ग़लती में हैं। (8)

यूसुफ़ (अ) को मार डालो, या उसे किसी सर ज़मीन में डाल आओ कि तुम्हारे बाप की तवज्जुह तुम्हारे लिए ख़ाली (ख़ास) हो जाए और तुम हो जाओ (हो जाना) उस के बाद नेक लोग। (9)

उन में से एक कहने वाले ने कहा, यूसुफ़ (अ) को क़त्ल न करो, और उसे डाल आओ अन्धे कुआं में कि उसे कोई मुसाफ़िर उठा ले (जाए), अगर तुम्हें करना ही है। (10)

कहने लगे ऐ हमारे अब्बा! तुझे क्या हुआ है? तू यूसुफ़ (अ) के बारे में हमारा एतिबार नहीं करता, और बेशक हम तो उस के ख़ैर ख़ाह हैं। (11)

कल उसे हमारे साथ भेजदे वह (जंगल के फल) खाए और खेले कूदे, और बेशक हम उस के मुहाफ़िज़ हैं। (12)

उस ने कहा बेशक मुझे यह ग़मगीन (फ़िक्रमन्द) करता है कि तुम उसे ले जाओ और मैं डरता हूँ कि उसे भेड़िया खाजाए, और तुम उस से बेख़बर रहो। (13)

वह बोले अगर उसे भेड़िया खाजाए जब कि हम एक क़वी जमाअत हैं, उस सूरत में बेशक हम ज़ियांकार ठहरे। (14)

फिर जब वह उसे लेगए और उन्हों ने इत्तिफ़ाक़ कर लिया कि उसे अन्धे कुआं में डालदें, और हम ने उस की तरफ़ वहि भेजी कि तू उन्हें उन के इस काम को ज़रूर जताएगा और वह न जानते (तुझे न पहचानते) होंगे। **(15)**
और अन्धेरा पड़े वह अपने बाप के पास रोते हुए आए। **(16)**
बोले! ऐ हमारे अब्बा! हम लगे दौड़ने आगे निकलने को, और हम ने यूसुफ़ (अ) को अपने असबाब के पास छोड़ दिया तो उसे भेड़िया खागया, और तू नहीं हम पर बावर करने वाला अगरचे हम सच्चे हों। **(17)**
और वह उस की क़मीस़ पर झूटा ख़ून (लगा कर) लाए, उस ने कहा (नहीं) बल्कि तुम्हारे लिए तुम्हारे दिलों ने एक बात बना ली है, पस (सब्र) ही अच्छा है और जो तुम बयान करते हो उस पर अल्लाह (ही) से मदद चाहता हूँ। **(18)**
और (उधर) एक क़ाफ़िला आया, पस उन्हों ने अपना पानी भरने वाला भेजा, उस ने अपना डोल डाला, उस ने कहा, आहा ख़ुशी की बात है, यह एक लड़का है और उन्हों ने उसे माले तिजारत समझ कर छुपा लिया, और अल्लाह ख़ूब जानता है जो वह करते थे। **(19)**
और उन्हों ने उसे बेच दिया खोटे दामों गिनती के चन्द दिरहमों में, और वह उस से बेज़ार हो रहे थे। **(20)**
और मिसर के जिस शख़्स ने उस को ख़रीदा उस ने कहा अपनी औरत को: इसे इज़्ज़त ओ इकराम से रख, शायद कि हमें नफ़ा पहुँचाए, या हम इसे बेटा बना लें, और इस तरह हम ने यूसुफ़ (अ) को मुल्क (मिसर) में जगह दी, और ताकि हम उसे बातों का अन्जाम निकालना (ख़ाबों की ताबीर) सिखाएं और अल्लाह अपने काम पर ग़ालिब है, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते। **(21)**
और जब वह (यूसुफ़ अ) अपनी कुव्वत (जवानी) को पहुँच गया हम ने उसे हुक्म और इल्म अ़ता किया, और उसी तरह हम नेकी करने वालों को जज़ा देते हैं। **(22)**

فَلَمَّا ذَهَبُوْا بِهٖ وَاَجْمَعُوْٓا اَنْ يَّجْعَلُوْهُ فِىْ غَيٰبَتِ الْجُبِّ ۚ

कुआं	अन्धा	में	उसे डालदें	कि	और उन्हों ने इत्तिफ़ाक़ कर लिया	वह उस को ले गए	फिर जब

وَاَوْحَيْنَآ اِلَيْهِ لَتُنَبِّئَنَّهُمْ بِاَمْرِهِمْ هٰذَا وَهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿١٥﴾

15	न जानते होंगे	और वह	उस	उन का काम	कि तू उन्हें ज़रूर जताएगा	उस की तरफ़	और हम ने वहि भेजी

وَجَآءُوْٓ اَبَاهُمْ عِشَآءً يَّبْكُوْنَ ﴿١٦﴾ قَالُوْا يٰٓاَبَانَآ اِنَّا ذَهَبْنَا

दौड़ने गए	हम	ऐ हमारे अब्बा	वह बोले	16	रोते हुए	अन्धेरा पड़े	अपने बाप के पास	और वह आए

نَسْتَبِقُ وَتَرَكْنَا يُوْسُفَ عِنْدَ مَتَاعِنَا فَاَكَلَهُ الذِّئْبُ ۚ وَمَآ

और नहीं	भेड़िया	तो उसे खागया	अपना असबाब	पास	यूसुफ़ (अ)	और हम ने छोड़ दिया	आगे निकलने

اَنْتَ بِمُؤْمِنٍ لَّنَا وَلَوْ كُنَّا صٰدِقِيْنَ ﴿١٧﴾ وَجَآءُوْ عَلٰى قَمِيْصِهٖ الثلثة

उस की क़मीस	पर	और वह आए (लाए)	17	सच्चे	और ख़्वाह हों हम	हम पर	बावर करने वाला	तू

بِدَمٍ كَذِبٍ ۗ قَالَ بَلْ سَوَّلَتْ لَكُمْ اَنْفُسُكُمْ اَمْرًا ۗ فَصَبْرٌ

पस सब्र	एक बात	तुम्हारे दिल	तुम्हारे लिए	बना ली	बल्कि	उस ने कहा	झूटा	ख़ून के साथ

جَمِيْلٌ ۗ وَاللّٰهُ الْمُسْتَعَانُ عَلٰى مَا تَصِفُوْنَ ﴿١٨﴾ وَجَآءَتْ سَيَّارَةٌ

एक क़ाफ़िला	और आया	18	जो तुम बयान करते हो	पर	मदद चाहता हूँ	और अल्लाह	अच्छा

فَاَرْسَلُوْا وَارِدَهُمْ فَاَدْلٰى دَلْوَهٗ ۗ قَالَ يٰبُشْرٰى هٰذَا غُلٰمٌ ۗ

एक लड़का	यह	आहा - ख़ुशी की बात	उस ने कहा	अपना डोल	पस उस ने डाला	अपना पानी भरने वाला	पस उन्हों ने भेजा

وَاَسَرُّوْهُ بِضَاعَةً ۗ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِمَا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٩﴾ وَشَرَوْهُ

और उन्हों ने उसे बेच दिया	19	वह करते थे	उसे जो	जानने वाला	और अल्लाह	माले तिजारत समझ कर	और उसे छुपा लिया

بِثَمَنٍۢ بَخْسٍ دَرَاهِمَ مَعْدُوْدَةٍ ۚ وَكَانُوْا فِيْهِ مِنَ الزّٰهِدِيْنَ ﴿٢٠﴾ ع ٢ ١٢

20	बेरग़बत, बेज़ार	से	उस में	और वह थे	गिनती के	दिरहम	खोटे	दाम

وَقَالَ الَّذِى اشْتَرٰىهُ مِنْ مِّصْرَ لِامْرَاَتِهٖٓ اَكْرِمِىْ مَثْوٰىهُ

उसे इज़्ज़त ओ इकराम से रख	अपनी औरत को	मिसर	से	उसे ख़रीदा	वह जो, जिस	और बोला

عَسٰٓى اَنْ يَّنْفَعَنَآ اَوْ نَتَّخِذَهٗ وَلَدًا ۗ وَكَذٰلِكَ مَكَّنَّا لِيُوْسُفَ

यूसुफ़ (अ) को	हम ने जगह दी	और इस तरह	बेटा	हम उसे बना लें	या	हम को नफ़ा पहुँचाए	कि	शायद

فِى الْاَرْضِ ۡ وَلِنُعَلِّمَهٗ مِنْ تَاْوِيْلِ الْاَحَادِيْثِ ۗ وَاللّٰهُ غَالِبٌ

ग़ालिब	और अल्लाह	बातें	अन्जाम निकालना	से	और ताकि उसे सिखाएं	ज़मीन (मुल्क)	में

عَلٰٓى اَمْرِهٖ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٢١﴾ وَلَمَّا بَلَغَ

पहुँचा गया	और जब	21	नहीं जानते	लोग	अक्सर	और लेकिन	अपने काम पर

اَشُدَّهٗٓ اٰتَيْنٰهُ حُكْمًا وَّعِلْمًا ۗ وَكَذٰلِكَ نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٢٢﴾

22	नेकी करने वाले	हम जज़ा देते हैं	और उसी तरह	और इल्म	हुक्म	हम ने उसे अ़ता किया	अपनी कुव्वत

وَرَاوَدَتْهُ الَّتِيْ هُوَ فِيْ بَيْتِهَا عَنْ نَّفْسِهٖ وَغَلَّقَتِ الْاَبْوَابَ

दरवाज़े	और बन्द कर दिए	अपने आप को रोकने से	उस का घर	में	उस	वह औरत जो	और उसे फुसलाया

وَقَالَتْ هَيْتَ لَكَ ؕ قَالَ مَعَاذَ اللّٰهِ اِنَّهٗ رَبِّيْۤ اَحْسَنَ مَثْوَايَ ؕ

और रहना सहना	बहुत अच्छा	मेरा मालिक	बेशक वह	अल्लाह की पनाह	उस ने कहा	आजा जल्दी कर	और बोली

اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٢٣﴾ وَلَقَدْ هَمَّتْ بِهٖ ۚ وَهَمَّ بِهَا ۚ لَوْلَاۤ اَنْ

कि	अगर न होता	उस का	और वह इरादा करते	उस का	और बेशक उस औरत ने इरादा किया	23	ज़ालिम (जमा)	भलाई नहीं पाते	बेशक

رَّاٰ بُرْهَانَ رَبِّهٖ ؕ كَذٰلِكَ لِنَصْرِفَ عَنْهُ السُّوْٓءَ وَالْفَحْشَآءَ ؕ

और बेहयाई	बुराई	उस से	हम ने फेर दिया	उसी तरह	अपना रब	दलील	वह देखे

اِنَّهٗ مِنْ عِبَادِنَا الْمُخْلَصِيْنَ ﴿٢٤﴾ وَاسْتَبَقَا الْبَابَ وَقَدَّتْ

और औरत ने फाड़ दी	दरवाज़ा	और दानों दौड़े	24	बरगुज़ीदा	हमारे बन्दे	से	बेशक वह

قَمِيْصَهٗ مِنْ دُبُرٍ وَّاَلْفَيَا سَيِّدَهَا لَدَا الْبَابِ ؕ قَالَتْ مَا جَزَآءُ

क्या सज़ा?	वह कहने लगी	दरवाज़े के पास	औरत का ख़ावन्द	और दोनों को मिला	पीछे से	उस की क़मीस

مَنْ اَرَادَ بِاَهْلِكَ سُوْٓءًا اِلَّاۤ اَنْ يُّسْجَنَ اَوْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٢٥﴾

25	दर्दनाक अ़ज़ाब	या	क़ैद किया जाए	यह कि	सिवाए	बुराई	तेरी बीवी से	इरादा किया	जो - जिस

قَالَ هِيَ رَاوَدَتْنِيْ عَنْ نَّفْسِيْ وَشَهِدَ شَاهِدٌ مِّنْ اَهْلِهَا ۚ

उस के लोग	से	एक गवाह	और गवाही दी	मेरा नफ़्स	से	मुझे फुसलाया	उस	उस ने कहा

اِنْ كَانَ قَمِيْصُهٗ قُدَّ مِنْ قُبُلٍ فَصَدَقَتْ وَهُوَ مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ﴿٢٦﴾

26	झूटे	से	और वह	तो वह सच्ची	आगे से	फटी हुई	उस की क़मीस	है	अगर

وَاِنْ كَانَ قَمِيْصُهٗ قُدَّ مِنْ دُبُرٍ فَكَذَبَتْ وَهُوَ مِنَ

से	और वह	तो वह झूटी	पीछे से	फटी हुई	उस की क़मीस	है	और अगर

الصّٰدِقِيْنَ ﴿٢٧﴾ فَلَمَّا رَاٰ قَمِيْصَهٗ قُدَّ مِنْ دُبُرٍ قَالَ اِنَّهٗ مِنْ

से	बेशक यह	उस ने कहा	पीछे से	फटी हुई	उस की क़मीस़	देखा	तो जब	27	सच्चे

كَيْدِكُنَّ ؕ اِنَّ كَيْدَكُنَّ عَظِيْمٌ ﴿٢٨﴾ يُوْسُفُ اَعْرِضْ عَنْ هٰذَا ٚ

उस	से - को	जाने दे	यूसुफ़ (अ)	28	बड़ा	तुम्हारा फ़रेब	बेशक	तुम औरतों का फ़रेब

ع ٣ ٩ ١٣ وَاسْتَغْفِرِيْ لِذَنْۢبِكِ ۖۚ اِنَّكِ كُنْتِ مِنَ الْخٰطِـِٕيْنَ ﴿٢٩﴾ وَقَالَ

और कहा	29	ख़ताकार (जमा)	से	तू है	बेशक तू	अपने गुनाह की	और ऐ औरत बख़्शिश मांग

نِسْوَةٌ فِي الْمَدِيْنَةِ امْرَاَتُ الْعَزِيْزِ تُرَاوِدُ فَتٰىهَا عَنْ

से	अपना गुलाम	फुसला रही है	अ़ज़ीज़ की बीवी	शहर में	औरतें

نَّفْسِهٖ ۚ قَدْ شَغَفَهَا حُبًّا ؕ اِنَّا لَنَرٰىهَا فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٣٠﴾

30	खुली	गुमराही	में	बेशक हम उसे देखती हैं	उस की मुहब्बत	जगह पकड़ गई है	उस का नफ़्स

उसे (यूसुफ़ अ को) उस औरत ने फुसलाया वह जिस के घर में थे अपने आप को रोकने (क़ाबू रखने) से, और दरवाज़े बन्द कर दिए और बोली आजा जल्दी कर, उस ने कहा अल्लाह की पनाह! बेशक वह (अ़ज़ीज़े मिस्र) मेरा मालिक है, उस ने मेरा रहना सहना बहुत अच्छा (रखा), बेशक ज़ालिम भलाई नहीं पाते। (23)

और बेशक उस औरत ने उस का इरादा किया और वह भी उस का इरादा करते, अगर यह न होता कि वह अपने रब की दलील देख लेते, उस तरह हम ने उस से फेर दी बुराई और बेहयाई, बेशक वह हमारे बरगुज़ीदा बन्दों में से था। (24)

और दोनों दरवाज़े की तरफ़ दौड़े, और उस औरत ने उस की क़मीस फाड़ दी पीछे से, और दोनों को उस का ख़ाविन्द दरवाज़े के पास मिला, वह कहने लगी उस की क्या सज़ा जिस ने तेरी बीवी से बुरा इरादा किया? सिवाए उस के कि वह क़ैद किया जाए या दर्दनाक अ़ज़ाब दिया जाए। (25)

उस (यूसुफ़ अ) ने कहा उस ने मुझे मेरे नफ़्स (की हिफ़ाज़त) से फुसलाया और गवाही दी उस के लोगों में से एक गवाह ने कि अगर उस की क़मीस आगे से फटी हुई है तो वह सच्ची है और वह (यूसुफ़ अ) झूटों में से है। (26)

और अगर उस की क़मीस़ पीछे से फटी हुई है तो वह झूटी है और वह (यूसुफ़ अ) सच्चों में से है। (27)

तो जब उस की क़मीस पीछे से फटी हुई देखी तो उस ने कहा यह तुम औरतों का फ़रेब है, बेशक तुम्हारा फ़रेब बड़ा है। (28)

यूसुफ़ (अ)! उस (ज़िक्र) को जाने दे और ऐ औरत! अपने गुनाह की बख़्शिश मांग, बेशक तू ही ख़ताकारों में से है। (29)

और शहर में औरतों ने कहा, अ़ज़ीज़ की बीवी ने फुसलाया है अपने गुलाम को उस के नफ़्स (की हिफ़ाज़त) से, उस की मुहब्बत (उस के दिल में) जगह पकड़ गई है, बेशक हम उसे खुली गुमराही में देखती हैं। (30)

فَلَمَّا سَمِعَتْ بِمَكْرِهِنَّ اَرْسَلَتْ اِلَيْهِنَّ وَاَعْتَدَتْ لَهُنَّ مُتَّكَاً

फिर जब	उस ने सुना	उन का फ़रेब	दावत भेजी	उन की तरफ़	और तैयार की	उन के लिए	एक महफ़िल

وَّاٰتَتْ كُلَّ وَاحِدَةٍ مِّنْهُنَّ سِكِّيْنًا وَّقَالَتِ اخْرُجْ عَلَيْهِنَّ ۚ فَلَمَّا

और दी	हर एक को	उन में से	एक एक छुरी	और कहा	निकल आ	उन पर (उनके सामने)	फिर जब

رَاَيْنَهٗۤ اَكْبَرْنَهٗ وَقَطَّعْنَ اَيْدِيَهُنَّ ز وَقُلْنَ حَاشَ لِلّٰهِ مَا هٰذَا بَشَرًا ط

उन्हों ने उसे देखा	उन पर उस का रुअ़ब छागया	और उन्हों ने काट लिए	अपने हाथ	और कहने लगीं	पनाह	अल्लाह की	नहीं यह	बशर

اِنْ هٰذَاۤ اِلَّا مَلَكٌ كَرِيْمٌ ﴿٣١﴾ قَالَتْ فَذٰلِكُنَّ الَّذِيْ لُمْتُنَّنِيْ فِيْهِ ط

नहीं	यह	मगर	फ़रिश्ता	बुज़ुर्ग	31	वह बोली	सो यह वही है	जो कि	तुम ने मलामत की मुझे	उस में

وَلَقَدْ رَاوَدْتُّهٗ عَنْ نَّفْسِهٖ فَاسْتَعْصَمَ ط وَلَئِنْ لَّمْ يَفْعَلْ مَاۤ اٰمُرُهٗ

और मैं ने उसे फुसलाया	से	उस का नफ़्स	तो उस ने बचा लिया	और अगर	उस ने न किया	जो	मैं कहती हूँ उसे

لَيُسْجَنَنَّ وَلَيَكُوْنًا مِّنَ الصّٰغِرِيْنَ ﴿٣٢﴾ قَالَ رَبِّ السِّجْنُ اَحَبُّ

अलबत्ता क़ैद कर दिया जाएगा	और अलबत्ता होजाएगा	से	बेइज़्ज़त (जमा)	32	उस ने कहा	ऐ मेरे रब	क़ैद	ज़ियादा पसन्द

اِلَيَّ مِمَّا يَدْعُوْنَنِيْۤ اِلَيْهِ ۚ وَاِلَّا تَصْرِفْ عَنِّيْ كَيْدَهُنَّ اَصْبُ

मुझ को	उस से जो	मुझे बुलाती हैं	उस की तरफ़	और अगर न फेरा	मुझ से	उन का फ़रेब	माइल हो जाऊंगा

اِلَيْهِنَّ وَاَكُنْ مِّنَ الْجٰهِلِيْنَ ﴿٣٣﴾ فَاسْتَجَابَ لَهٗ رَبُّهٗ فَصَرَفَ عَنْهُ

उन की तरफ़	और मैं होंगा	से	जाहिल (जमा)	33	सो क़ुबूल कर ली	उस की (दुआ)	उस का रब	पस फेर दिया	उस से

كَيْدَهُنَّ ط اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿٣٤﴾ ثُمَّ بَدَا لَهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَا رَاَوُا

उन का फ़रेब	बेशक वह	वह	सुनने वाला	जानने वाला	34	फिर	उन्हें सूझा	उस के	बाद	जब	उन्हों ने देखीं

الْاٰيٰتِ لَيَسْجُنُنَّهٗ حَتّٰى حِيْنٍ ﴿٣٥﴾ ع وَدَخَلَ مَعَهُ السِّجْنَ فَتَيٰنِ ط قَالَ ع ٦ ١٤

निशानियां	उसे ज़रूर क़ैद में डालें	एक मुद्दत तक	35	और दाख़िल हुए	उस के साथ	क़ैद ख़ाना	दो जवान	कहा

اَحَدُهُمَاۤ اِنِّيْۤ اَرٰىنِيْۤ اَعْصِرُ خَمْرًا ۚ وَقَالَ الْاٰخَرُ اِنِّيْۤ اَرٰىنِيْۤ اَحْمِلُ فَوْقَ

उन में से एक	बेशक मैं देखता हूँ	निचोड़ रहा हूँ	शराब	और कहा	दूसरा	मैं देखता हूँ	उठाए हुए हूँ	ऊपर

رَاْسِيْ خُبْزًا تَاْكُلُ الطَّيْرُ مِنْهُ ط نَبِّئْنَا بِتَاْوِيْلِهٖ ۚ اِنَّا نَرٰىكَ مِنَ

अपना सर	रोटी	खा रहे हैं	परिन्दे	उस से	हमें बतलाइए	उस की ताबीर	बेशक हम तुझे देखते हैं	से

الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٣٦﴾ قَالَ لَا يَاْتِيْكُمَا طَعَامٌ تُرْزَقٰنِهٖۤ اِلَّا نَبَّاْتُكُمَا

नेकोकार (जमा)	36	उस ने कहा	तुम्हारे पास नहीं आएगा	खाना	जो तुम्हें दिया जाता है	मगर	मैं तुम्हें बतलादूंगा

بِتَاْوِيْلِهٖ قَبْلَ اَنْ يَّاْتِيَكُمَا ط ذٰلِكُمَا مِمَّا عَلَّمَنِيْ رَبِّيْ ط اِنِّيْ تَرَكْتُ

उस की ताबीर	क़ब्ल	कि	वह आए तुम्हारे पास	यह	उस से जो	मुझे सिखाया	मेरा रब	बेशक मैं	मैं ने छोड़ा

مِلَّةَ قَوْمٍ لَّا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ كٰفِرُوْنَ ﴿٣٧﴾

दीन	वह क़ौम	जो ईमान नहीं लाते	अल्लाह पर	और वह	आख़िरत से	वह	इन्कार करते हैं	37

फिर जब उस ने उन के फ़रेब (का ज़िक्र) सुना तो उन्हें दावत भेजी, और उन के लिए एक महफ़िल तैयार की, और (फल काटने को) दी उन में से हर एक को एक एक छुरी, और कहा उन के सामने निकल आ, फिर जब उन्हों ने (यूसुफ़ अ) को देखा उन पर उस का रुअ़ब (हुस्न) छागया और उन्हों ने (फलों की जगह) अपने हाथ काट लिए और कहने लगीं अल्लाह की पनाह! यह बशर नहीं, मगर यह तो बुज़ुर्ग फ़रिश्ता है। **(31)** वह बोली सो यह वही है जिस (के बारे) में तुम ने मुझे मलामत की, और मैं ने उसे उस के नफ़्स (की हिफ़ाज़त से) फुसलाया, तो उस ने (अपने आप को) बचा लिया और जो मैं कहती हूँ अगर उस ने ना किया तो अलबत्ता वह क़ैद कर दिया जाएगा और बेइज़्ज़त लोगों मे से होगा। **(32)** उस (यूसुफ़ अ) ने कहा ऐ मेरे रब! मुझे क़ैद उस से ज़ियादा पसन्द है जिस की तरफ़ वह मुझे बुलाती हैं, अगर तू ने मुझ से उन का फ़रेब न फेरा तो मैं माइल हो जाऊंगा उन की तरफ़, और जाहिलों में से होंगा। **(33)** सो उस के रब ने उस की दुआ क़ुबूल करली, पस उस से उन का फ़रेब फेर दिया, बेशक वह सुनने वाला जानने वाला है। **(34)** फिर निशानियां देख लेने के बाद उन्हें सूझा कि उसे ज़रूर क़ैद में डाल दें एक मुद्दत तक। **(35)** और उस के साथ दो जवान क़ैद ख़ाने में दाख़िल हुए, उन में से एक ने कहा बेशक मैं (ख़्वाब में) देखता हूँ कि मैं शराब निचोड़ रहा हूँ, और दूसरे ने कहा मैं (ख़्वाब में) देखता हूँ कि अपने सर पर रोटी उठाए हुए हूँ, परिन्दे उस से खा रहे हैं, हमें उस की ताबीर बतलाइए, बेशक हम आप को नेकोकारों में से देखते हैं। **(36)** उस (यूसुफ़ अ) ने कहा तुम्हारे पास खाना नहीं आएगा जो तुम्हें दिया जाता है, मगर मैं तुम्हें उस की ताबीर तुम्हारे पास उस के आने से पहले बतलादूंगा, यह उस (इल्म) से है जो मेरे रब ने मुझे सिखाया है, बेशक मैं ने उस क़ौम का दीन छोड़ दिया जो अल्लाह पर ईमान नहीं लाते, और वह (रोज़े) आख़िरत से इन्कार करते हैं। **(37)**

وَاتَّبَعْتُ مِلَّةَ اٰبَآءِيْٓ اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ ۭ مَا كَانَ

नहीं है	और याकूब (अ)	और इसहाक़ (अ)	इब्राहीम (अ)	अपने बाप दादा	दीन	और मैं ने पैरवी की

لَنَآ اَنْ نُّشْرِكَ بِاللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ ۭ ذٰلِكَ مِنْ فَضْلِ اللّٰهِ عَلَيْنَا

हम पर	अल्लाह का फ़ज़्ल	से	यह	कोई - किसी शै	अल्लाह का	हम शरीक ठहराएं	कि	हमारे लिए

وَعَلَى النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَشْكُرُوْنَ ٣٨ يٰصَاحِبَيِ

ऐ मेरे साथियो!	38	शुक्र अदा नहीं करते	लोग	अक्सर	और लेकिन	और लोगों पर

السِّجْنِ ءَاَرْبَابٌ مُّتَفَرِّقُوْنَ خَيْرٌ اَمِ اللّٰهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ٣٩

39	ज़बरदस्त - ग़ालिब	एक, यकता	या अल्लाह	बेहतर	जुदा जुदा	क्या कई माबूद	क़ैद खाना

مَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖٓ اِلَّآ اَسْمَآءً سَمَّيْتُمُوْهَآ اَنْتُمْ

तुम	तुम ने रख लिए हैं	नाम	मगर	उस के सिवा	तुम पूजते	नहीं

وَاٰبَآؤُكُمْ مَّآ اَنْزَلَ اللّٰهُ بِهَا مِنْ سُلْطٰنٍ ۭ اِنِ الْحُكْمُ اِلَّا لِلّٰهِ ۭ

अल्लाह का	मगर	हुक्म	नहीं	कोई सनद	उस के लिए	अल्लाह ने उतारी	नहीं	और तुम्हारे बाप दादा

اَمَرَ اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّآ اِيَّاهُ ۭ ذٰلِكَ الدِّيْنُ الْقَيِّمُ وَلٰكِنَّ

और लेकिन	सीधा दीन	यह	सिर्फ़ उस की	मगर	इबादत करो तुम	कि न	उस ने हुक्म दिया

اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ٤٠ يٰصَاحِبَيِ السِّجْنِ اَمَّآ اَحَدُكُمَا

तुम में से एक	जो	क़ैद ख़ाना	ऐ मेरे साथियो	40	नहीं जानते	अक्सर लोग

فَيَسْقِيْ رَبَّهٗ خَمْرًا ۚ وَاَمَّا الْاٰخَرُ فَيُصْلَبُ فَتَاْكُلُ الطَّيْرُ

परिन्दे	पस खाएंगे	तो सूली दिया जाएगा	दूसरा	और जो	शराब	अपना मालिक	सो वह पिलाएगा

مِنْ رَّاْسِهٖ ۭ قُضِيَ الْاَمْرُ الَّذِيْ فِيْهِ تَسْتَفْتِيٰنِ ٤١ وَقَالَ

और कहा	41	तुम पूछते थे	उस में	वह जो	काम - बात	फ़ैसला हो चुका	उस के सर से

لِلَّذِيْ ظَنَّ اَنَّهٗ نَاجٍ مِّنْهُمَا اذْكُرْنِيْ عِنْدَ رَبِّكَ ۡ فَاَنْسٰىهُ

पस उस को भुला दिया	अपना मालिक	पास	मेरा ज़िक्र करना	उन दोनों से	बचेगा वह	कि वह	उस ने गुमान किया	उस से जिस

ع ٥/٧ ١٥ الشَّيْطٰنُ ذِكْرَ رَبِّهٖ فَلَبِثَ فِي السِّجْنِ بِضْعَ سِنِيْنَ ٤٢

42	चन्द बरस	क़ैद में	तो रहा	अपने मालिक से ज़िक्र करना	शैतान

وَقَالَ الْمَلِكُ اِنِّىْٓ اَرٰى سَبْعَ بَقَرٰتٍ سِمَانٍ يَّاْكُلُهُنَّ

वह खाती हैं	मोटी ताज़ी	गाएं	सात	मैं देखता हूँ	कि मैं	बादशाह	और कहा

سَبْعٌ عِجَافٌ وَّسَبْعَ سُنْۢبُلٰتٍ خُضْرٍ وَّاُخَرَ يٰبِسٰتٍ ۭ يٰٓاَيُّهَا الْمَلَاُ

ऐ मेरे सरदारो	ख़ुश्क	और दूसरे	सब्ज़	ख़ोशे	और सात	दुबली पतली	सात

اَفْتُوْنِيْ فِيْ رُءْيَايَ اِنْ كُنْتُمْ لِلرُّءْيَا تَعْبُرُوْنَ ٤٣

43	ताबीर देने वाले	ख़्वाब की	तुम हो	अगर	मेरे ख़्वाब	में (की)	बतलाओ मुझे ताबीर

और मैं ने अपने बाप दादा इब्राहीम (अ), और इसहाक़ (अ) और याकूब (अ) के दीन की पैरवी की, हमारा (काम) नहीं कि हम शरीक ठहराएं अल्लाह का किसी शै को, यह हम पर और लोगों पर अल्लाह का फ़ज़्ल है, लेकिन अक्सर लोग शुक्र अदा नहीं करते। (38)

ऐ मेरे क़ैद के साथियो! क्या जुदा जुदा कई माबूद बेहतर हैं? या एक अल्लाह? (सब पर) ग़ालिब। (39)

उस के सिवा तुम कुछ नहीं पूजते मगर नाम हैं जो तुम ने रख लिए (तराश लिए) हैं, और तुम्हारे बाप दादा ने, अल्लाह ने उन की कोई सनद नहीं उतारी, हुक्म सिर्फ़ अल्लाह का है, उस ने हुक्म दिया कि उस के सिवा किसी की इबादत न करो, यह सीधा दीन है, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते। (40)

ऐ मेरे क़ैद ख़ाने के साथियो! तुम में से एक अपने मालिक को शराब पिलाएगा, और जो दूसरा है तो सूली दिया जाएगा, पस परिन्दे उस के सर से खाएंगे। उस बात का फ़ैसला हो चुका जिस (के बारे) में तुम पूछते थे। (41)

और यूसुफ़ (अ) ने उन दोनों में से जिस (के मुतअ़ल्लिक़) गुमान किया कि वह बचेगा, उस से कहा अपने मालिक के पास मेरा ज़िक्र करना, पस शैतान ने उसे भुला दिया अपने मालिक से उस का ज़िक्र करना, तो वह क़ैद में चन्द बरस रहा। (42)

और बादशाह ने कहा कि मैं देखता हूँ सात मोटी ताज़ी गाएं, उन्हें सात दुबली पतली गाएं खा रही हैं, और सात सब्ज़ ख़ोशे और दूसरे ख़ुश्क, ऐ सरदारो! मुझे मेरे ख़्वाब की ताबीर बतलाओ, अगर तुम ख़्वाब की ताबीर देने वाले हो (ताबीर देना जानते हो)। (43)

قَالُوْٓا اَضْغَاثُ اَحْلَامٍ ۚ وَمَا نَحْنُ بِتَاْوِيْلِ الْاَحْلَامِ بِعٰلِمِيْنَ ﴿٤٤﴾

44	जानने वाले	ख़्वाब (जमा)	ताबीर देना	हम	और नहीं	ख़्वाब	परेशान	उन्हों ने कहा

وَقَالَ الَّذِيْ نَجَا مِنْهُمَا وَادَّكَرَ بَعْدَ اُمَّةٍ اَنَا اُنَبِّئُكُمْ بِتَاْوِيْلِهٖ

उस की ताबीर	मैं बतलाऊंगा तुम्हें	एक मुद्दत	बाद	और उसे याद आया	उन दो से	बचा	वह जो	और उस ने कहा

فَاَرْسِلُوْنِ ﴿٤٥﴾ يُوْسُفُ اَيُّهَا الصِّدِّيْقُ اَفْتِنَا فِيْ سَبْعِ بَقَرٰتٍ

गाएं	सात	में	हमें बता	ऐ बड़े सच्चे	ऐ यूसुफ़ (अ)	45	सो मुझे भेज दो

سِمَانٍ يَّاْكُلُهُنَّ سَبْعٌ عِجَافٌ وَّسَبْعِ سُنْۢبُلٰتٍ خُضْرٍ وَّاُخَرَ

और दूसरे	सब्ज़	ख़ोशे	और सात	दुबली पतली	सात	वह खा रही हैं	मोटी ताज़ी

يٰبِسٰتٍ ۙ لَّعَلِّيْٓ اَرْجِعُ اِلَى النَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَعْلَمُوْنَ ﴿٤٦﴾ قَالَ تَزْرَعُوْنَ

खेती बाड़ी करोगे	उस ने कहा	46	आगाह हों	शायद वह	लोगों की तरफ़ (पास)	मैं लौटूँ	ताकि	ख़ुश्क

سَبْعَ سِنِيْنَ دَاَبًا ۚ فَمَا حَصَدْتُّمْ فَذَرُوْهُ فِيْ سُنْۢبُلِهٖٓ اِلَّا قَلِيْلًا

थोड़ा जितना	मगर	उस के ख़ोशे में	तो उसे छोड़ दो	तुम काटो	फिर जो	लगातार	साल	सात

مِّمَّا تَاْكُلُوْنَ ﴿٤٧﴾ ثُمَّ يَاْتِيْ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ سَبْعٌ شِدَادٌ يَّاْكُلْنَ مَا

जो	खाजाएंगे	सख़्त	सात	उस के बाद में	आएंगे	फिर	47	तुम खालो	से - जो

قَدَّمْتُمْ لَهُنَّ اِلَّا قَلِيْلًا مِّمَّا تُحْصِنُوْنَ ﴿٤٨﴾ ثُمَّ يَاْتِيْ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ

उस के बाद	आएगा	फिर	48	तुम बचाओगे	से - जो	थोड़ा सा	सिवाए	उन के लिए	तुम ने रखा

عَامٌ فِيْهِ يُغَاثُ النَّاسُ وَفِيْهِ يَعْصِرُوْنَ ﴿٤٩﴾ ۧ وَقَالَ الْمَلِكُ ائْتُوْنِيْ ع ٦ ١٦

मेरे पास ले आओ	बादशाह	और कहा	49	वह निचोड़ेंगे	और उस में	लोग	बारिश बरसाई जाएगी	उस में	एक साल

بِهٖ ۚ فَلَمَّا جَآءَهُ الرَّسُوْلُ قَالَ ارْجِعْ اِلٰى رَبِّكَ فَسْــَٔلْهُ مَا بَالُ

क्या हाल?	पस उस से पूछो	अपना मालिक	तरफ़ (पास)	लौट जा	उस ने कहा	क़ासिद	उस के पास आया	पस जब	उसे

النِّسْوَةِ الّٰتِيْ قَطَّعْنَ اَيْدِيَهُنَّ ۭ اِنَّ رَبِّيْ بِكَيْدِهِنَّ عَلِيْمٌ ﴿٥٠﴾

50	वाक़िफ़	उन का फ़रेब	मेरा रब	बेशक	अपने हाथ	उन्हों ने काटे	वह जो	औरतें

قَالَ مَا خَطْبُكُنَّ اِذْ رَاوَدْتُّنَّ يُوْسُفَ عَنْ نَّفْسِهٖ ۭ قُلْنَ حَاشَ

पनाह	वह बोलीं	उस का नफ़्स	से	यूसुफ़ (अ)	तुम ने फुसलाया	जब	क्या हाल था तुम्हारा	उस ने कहा

لِلّٰهِ مَا عَلِمْنَا عَلَيْهِ مِنْ سُوْٓءٍ ۭ قَالَتِ امْرَاَتُ الْعَزِيْزِ الْـٰٔنَ حَصْحَصَ

ज़ाहिर हो गई	अब	अज़ीज़	औरत	बोली	कोई बुराई	उस पर (में)	हम ने मालूम की	नहीं	अल्लाह की

الْحَقُّ ۡ اَنَا رَاوَدْتُّهٗ عَنْ نَّفْسِهٖ وَاِنَّهٗ لَمِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿٥١﴾ ذٰلِكَ لِيَعْلَمَ

ताकि वह जान ले	यह	51	सच्चे	अलबत्ता - से	और वह बेशक	उस का नफ़्स	से	उसे फुसलाया मैं ने	मैं	हक़ीक़त

اَنِّيْ لَمْ اَخُنْهُ بِالْغَيْبِ وَاَنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِيْ كَيْدَ الْخَاۗىِٕنِيْنَ ﴿٥٢﴾

52	दग़ाबाज़ (जमा)	फ़रेब	नहीं चलने देता	और बेशक अल्लाह	पीठ पीछे	नहीं उस की ख़ियानत की	बेशक मैं

उन्हों ने कहा (यह) परेशान ख़्वाब हैं और हम (ऐसे) ख़्वाबों की ताबीर जानने वाले नहीं (नहीं जानते)। (44)

और वह जो उन दोनों (में) से बचा था और उसे एक मुद्दत के बाद याद आया, उस ने कहा मैं तुम्हें उस की ताबीर बतलाऊंगा, सो मुझे भेज दो। (45)

ऐ यूसुफ़ (अ)! ऐ बड़े सच्चे! हमें (ख़्वाब की ताबीर) बता, सात मोटी ताज़ी गायों को खा रही हैं सात दुबली पतली गाएं, और सात ख़ोशे सब्ज़ हैं और दूसरे ख़ुश्क, ताकि मैं लोगों के पास लौट कर जाऊं शायद वह आगाह हों। (46)

उस ने कहा तुम सात साल लगातार खेती बाड़ी करोगे, फिर जो तुम काटो तो उसे उस के ख़ोशे में छोड़ दो, मगर थोड़ा जितना जो तुम उस में से खालो। (47)

फिर उस के बाद आएंगे सात (7) सख़्त साल, खा जाएंगे जो तुम ने उन के लिए (बचा) रखा, सिवाए उस के जो तुम थोड़ा बचाओगे। (48)

फिर उस के बाद एक साल आएगा उस में लोगों पर बारिश बरसाई जाएगी और वह उस में (रस) निचोड़ेंगे। (49)

और बादशाह ने कहा उसे मेरे पास ले आओ, पस जब क़ासिद उस के पास आया तो उस ने कहा अपने मालिक के पास लौट जाओ और उस से पूछो उन औरतों का क्या हाल है? जिन्हों ने अपने हाथ काटे थे, बेशक मेरा रब उन के फ़रेब से ख़ूब वाक़िफ़ है। (50)

बादशाह ने (उन औरतों से) कहा तुम्हारा क्या हाले (वाक़ी) था जब तुम ने यूसुफ़ (अ) को उस के नफ़्स (की हिफ़ाज़त) से फुसलाया वह बोलीं अल्लाह की पनाह! हम ने उस में कोई बुराई नहीं मालूम की (नहीं पाई) अज़ीज़ (मिसर) की औरत बोली अब हक़ीक़त ज़ाहिर हो गई है, मैं ने (ही) उसे उस के नफ़्स की हिफ़ाज़त से फुसलाया और वह बेशक सच्चों में से है (सच्चा है)। (51)

(यूसुफ़ अ ने कहा) यह (इस लिए था) ताकि वह जान ले कि मैं ने पीठ पीछे उस की ख़ियानत नहीं की, और बेशक अल्लाह चलने नहीं देता दग़ाबाज़ों का फ़रेब। (52)